पंच देवीदर्शन

हेमराज बंसल

PDF

जय मां वैष्णौ देवी। जय माता दी। उत्तरी भारत में भक्तों को सर्वाधिक खींचने वाली यात्रा है वैष्णवदेवी की। अब इस वर्ष कहीं घूमने तो जाना ही था। एक दिन मित्र सुदर्शन साबू व मैं सपत्निक बैठे बातें कर रहे थे तो कार्यक्रम तय हो गया। चार सितम्बर 1997 को जाना था पर टिकट जम्मू तवी सुपरफास्ट ट्रेन के दो तारीख मंगलवार के ही आ गये। अब जैसी इच्छा मां की। इसके बाद भी बाधाऐं आई। सुदर्शन इतना बीमार हुआ कि टिकट रद्ध करवाने तक की नौबत आ गई। हम सबने मिल कर 'माताजी' से सुदर्शन के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की। पच्चीस तारीख से सुदर्शन का स्वास्थ्य सुधरने लगा। एक और बाधा आई। बड़े भाई सा. विष्णुजी साबू ने भी 31 सितम्बर, 1997 को हरिद्वार जाने का कार्यक्रम बना लिया। दो भाई घर के बाहर रहे यह व्यवसायिक दृष्टि से कष्टपूर्ण था। हमें भाई सा. विष्णुजी का आशीर्वाद मिला और सब बाधाऐं दूर हो गई। मेरी ओर से भी ऐन वक्त पर बाधा आई। दोनों पति–पत्नी के बीच मनमुटाव हो गया फिर समझौता हुआ ही पर यात्रा जाने से पूर्व मूड खराब सा हो गया।

हमने कोटा हमारी जीप से जाना तय किया था। उसमें खराबी आने के कारण काफी देर तक तनाव रहा। जीप ठीक हुई और हम साबू दम्पत्ति को लेने तेलफैक्टरी जाने लगे तो रेल्वे फाटक ने रास्ता रोका। कुल मिला कर बाधाऐं आती रही। हम साढ़े सात बजे बारां छोड़ सके। नौ बजे कोटा प्लेटफार्म पर पहुंचे। एक और झटका यह जान कर लगा कि हमारी दो से पांच नम्बर की प्रतीक्षा सूची वाली टिकटें कन्फर्म नहीं हुई हैं। आगे आने वाली समस्या के बारे में विचार कर हम खाना खाकर निपटे। इसी दौरान हमारी मुलाकात विनोदजी कचोलिया जो साबू के परिवारिक मित्र हैं, से हुई। हमारी टिकट की समस्या सुन उन्होंने अपने स्तर पर प्रयास किया पर आज सीट खाली थी ही नहीं। उन्होंने यह व्यवस्था अवश्य कर दी कि हम गाड़ी आने पर आरक्षित डिब्बे एस–9 में चढ़ गये। विनोद जी कचोलिया ने हमारा सामान उठा हमें डिब्बे में ले जाकर बिठाने तक हमारी बहुत मदद की।

मुझे सदा प्रतीक्षा सूची का मेरा आरक्षण कंफर्म होने का विश्वास रहता है। मेरी यात्रा सदैव सुखद रहती है। इसी विश्वास पर मैंने साबू के विरोध के बावजूद वेटिंग के टिकट पर पूरा भरोसा किया। आज मेरा यह विश्वास टूट गया। इस यात्रा में हमें बाधायें भी निरंतर आ ही रही है। शायद माताजी हमारी परीक्षा ले रही हैं और हम उसमें खरा उतरने का प्रयास कर रहे हैं। डिब्बे में चढ़ने के बाद पता लगा कि पूरा डिब्बा श्रीकृष्ण के गुजराती भक्तों से भरा पड़ा है। उनमें श्रद्धा भावना हमारे से ज्यादा है। अभी भादौ का महिना चल रहा है। तीन दिन बाद भादौ सुदी सप्तमी से बल्लभ सम्प्रदाय द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी बृज की चौरासी कोसीय परिक्रमा का आयोजन किया जा रहा है। श्रीकृष्ण की भक्ति एवं बल्लभ सम्प्रदाय का गुजरात में बहुत प्रभाव है। प्रतिवर्ष गुजरात से मथुरा जाकर हजारों यात्री इस यात्रा में शामिल होते हैं। हापा सुपरफास्ट तथा सौराष्ट्र सुपरफास्ट जो क्रमशः मंगल

एवं बुधवार को हापा एवं राजकोट से चलती है, इन यात्रियों के लिये सर्वोत्तम साधन है। लगभग पूरी गाड़ी इन यात्रियों द्वारा थोक में बुक कर ली गई थी। सभी यात्रियों के पास भारी मात्रा में सामान है। बिस्तर, खाना बनाने के बर्तन, गैसचूल्हा, आटा–दाल सब इनके साथ है। इन सामानों के बीच में बड़ी मुश्किल से हमने अपना सामान रखा तथा टिकने के लिये जगह तलाश की। ये गांवों के धर्मपरायण लोग हैं, इन्होंने हमारा कोई विरोध नहीं किया। थोड़ी देर बाद एक महिला ने ऊपर के बर्थ से अपना सामान उतारा। वहां हमारा सामान जमा तथा महिलायें बैठ गई। मेरे पास बैठा बाईस वर्षिय जवान अपने वृद्ध माता–पिता के साथ परिक्रमा करने जा रहा है। इस जवान के टांग में फ्रेक्चर है, अभी भी प्लास्तर बंधा है। इसके पिताजी को कुछ दिन पहले हार्ट–अटैक हुआ था। इतना होने के बावजूद उत्साह में कोई कमी नहीं है। इन तीन प्राणियों के पास पंद्रह दागीना सामान है। वह हमारे से पूरे रास्ते निवेदन करता रहा कि हम उन्हें तथा उनके सामान को मथुरा में उतरवा दें। उसने बताया कि राजकोट में कई लोगों का सामान रह गया। वहां गाड़ी मात्र दस मिनट रुकी थी तथा पूरे डिब्बे की सवारियों के पास इसी तरह कई–कई दागीने सामान था। उन लोगों ने बारह बजे से सामान निकालने की उठा–पटक शुरु कर दी एवं अपने सामान दरवाजों पर जमा लिये। मथुरा स्टेशन दो बजे आया। काफी चिल्ल–पौं मची। हमारे अतिरिक्त काफी अन्य लोग भी मदद को आ गये और सारा सामान आराम से उतर गया। गाड़ी भी यहां कोई आध घंटा रुकी। पूरा डिब्बा खाली हो गया और हम अपने बिस्तर लगा कर लेट गये। थोड़ी देर बाद टी.टी. आया और उसने हम जहां लेट रहे थे वही सीटें हमारे को आरक्षित कर रसीद काट दी।

हमारा आराम अधिक देर नहीं चल सका। दिल्ली आते ही यात्रियों का हुजूम चढ़ा। एक ने आकर बताया कि यह तो मेरी बर्थ है। पन्द्रह दिन पहले का कम्प्यूटर का आरक्षण है। धीरे–धीरे सभी सीटों के दावेदार आ गये। टी.टी. ने हमारे से धोखा किया। हमें सीटें छोड़नी ही पड़ी। टी.टी. को ढूंढा तो पता लगा कि उन महाशय की यहां तक की ही ड्यूटी थी। वे दिल्ली में उतर गये व अब नये टी. टी. महोदय आ गये हैं। मैं उनसे जाकर मिला एवं हमारे साथ हुये धोखे की बात कार्यवाही करने की धमकी देते हुये बताई। थोड़ी देर बाद वे आये और उन्होंने चार्ट में देखकर हमें दूसरी सीटें दे दी। इन्हें हमने चाय–पानी नहीं दिया। नये टी.टी. ने केवल यह पूछा कि आपने उन्हें क्या दिया? स्वाभाविक है यह उनका रोज का ही काम है, आपस में कर लेंगें। इस तरह साढ़े तीन सौ ज्यादा खर्च करने एवं आठ घंटे की शारीरिक एवं मानसिक तकलीफ झेलने के बाद हमें कुछ आराम नसीब हो सका। ट्रेन में इसके बाद कोई खास बात नहीं हुई। चक्कीबैंक के बाद ट्रेन लोकल की तरह सभी स्टेशनों पर रुकती हुई पौने चार बजे जम्मू पहुंची। हमने कुली कर अपना सामान प्लेटफार्म के बाहर रखवाया जहां से

कटरा के लिये बसें मिलती हैं। यहीं हमें बृजेश गोयनका बारां वाला हमारा इंतजार करता हुआ मिल गया। वे लोग 31.8.97 को बारां से चले थे तथा अभी तीन बजे दर्शन कर लौटे हैं। उनका जम्मू से रात नौ बजे की ट्रेन से दिल्ली का रिजर्वेशन है। उन्होंने उनका सामान लॉकरुम में जमा करवा रखा है। उन्हें हमारे आने की सूचना थी। परदेश में अपने गांव का आदमी मिलने पर अपार प्रसन्नता होती है। हमने परस्पर हालचाल पूछे। वे लोग बाजार चले गये तथा हमने अपने सामान कटरा जाने वाली बस में डाले। साबूजी ने आगे वाली सीटों के ही टिकट लिये चाहे इसके लिये हमें पहली बस छोड़नी पड़ी। यहां कटरा जाने के लिये सदैव बसें लगी रहती है।

जम्मू–कटरा पूरा पहाड़ी घुमावदार रास्ता है। रास्ते में सुरंग भी आती है। पहाड़ी सौन्दर्य निहारते सात बजे करीब हम कटरा पहुंचे। थके हुये थे ही, पहला जो होटल देखा, उसी में जाकर सामान डाल दिये। पौने दो सौ रु. प्रति कमरा प्रतिदिन में दो कमरे अटैच लेट–बॉथ मय कूलर एवं गीजर के लिये। सामान सेट कर स्नानादि से निपट, बाजार जाकर भोजन किया, थोड़ी देर बाजार में घूमे व वापस होटल आकर सो गये।

योजनानुसार तारीख 4–9–1997 गुरुवार को प्रातः जल्दी उठ ऑटोरिक्शा कर, वैष्णव देवी यात्रा शुरु करने हेतु बाणगंगा पहुंचे। प्राकृतिक पर गंदे से स्थान पर मैंने स्नान किया, बाकी साथियों ने छींटे मारकर अपने को पवित्र घोषित कर लिया। आगे एक हॉटल पर तीनों ने चाय तथा मैंने ठंडा लिया। साबू दम्पत्ति ने बिना कुछ खाये ही मां वैष्णव देवी के दर्शन करने का प्रण ले लिया पर मैं ऐसी हिम्मत नहीं जुटा पाया। आठ बज चुके हैं और अभी बारह किलोमीटर चलना है। हमने चढ़ाई शुरु की। साबू परिवार जल्दी ही काफी आगे निकल गया। मैं पत्नी के साथ रुकता, आराम करता चल रहा था। यहां रास्ते में माता वैष्णव देवी शेरीन बोर्ड की कई जलपान गृह की दुकानें हैं। इन दुकानों पर अच्छा नाश्ता–चाय आदि कम कीमत पर उपलब्ध है। ये दुकानें स्वयं सेवा आधारित हैं तथा न नफा न नुकसान के अर्थशास्त्र पर चलाई जा रही हैं। सब दुकानों के नाम पौराणिक व सांस्कृतिक हैं। हमने आलोक अल्पाहार गृह में बिस्किट का नाश्ता किया। साबू जी हमें बाणगंगा में बिछुड़ने के बाद अर्द्धकुंवारी पर ही मिले। वे हमारे से आधे घंटे पूर्व ही यहां पहुंच, अपने कपड़े एवं पसीना सुखा रहे थे। वे दूसरे रोड पर थे और यह माताजी की कृपा ही थी कि हम मिल गये। हम आपस में मिल अत्यन्त प्रसन्न हुये। हमने अपना सारा सामान क्लॉक रुम में जमा करवाया एवं साढ़े दस बजे अर्द्धकुंवारी माता तथा गर्भजून के दर्शनार्थ लाइन में लग गये।

अभी यहां भीड़ का समय नहीं है, फिर भी अर्द्धकुवांरी दर्शन में हमें दो घंटे लग गये। यहां पाइप की रैलिंग लगाकर पंक्ति बनाई जाती है। यात्री चलते हुये ही माताजी के दर्शन करते हैं। इसके

बाद पंक्तिबद्ध ही एक–एक कर सुरंग में प्रवेश कर दूसरी ओर से बाहर निकलते हैं। सुरंग बहुत संकरी है तथा इसमें से निकलना रोमांचक है। असावधानी होने, या भगदड़ मचने पर जान का खतरा तक हो सकता है। समिति द्वारा नियुक्त कार्यकर्ता पूरी तन्मयता से यात्रियों को दर्शन करवाकर बाहर निकालते हैं। हमारे दर्शन कर बाहर आने के बाद बहुत जोर से वर्षा आई। हमें हमारे रैनकोट याद आये जो हम खुला मौसम देख होटल में ही छोड़ आये हैं। हमने हमारे गीले कपड़े यहां रैलिंग पर सुखा रखे थे जो बारिश में वापस गीले हो गये। हमारे कपड़े दो घंटे दर्शन के दौरान बाहर फैले रहे पर कोई चीज गायब नहीं हुई। कोई एक घंटा बाद बारिश रुकने पर हम यात्रा प्रारम्भ कर सके।

आगे सांझी छत तक सीधी चढ़ाई है। चढ़ाई के पूरे रास्ते साबू परिवार हमारे से आगे रहा। कई जगह रुकते–बैठते बढ़े। सांझी छत के बाद उतार आने पर हम सरपट दौड़ लिये। यहां दो ढाई किलोमीटर रास्ते में टीनशेड हो रहा है। पहाड़ से पत्थर गिरने पर लगने या बारिश होने पर यात्रियों के भीगने का खतरा नहीं है। भुवन से करीब एक किमी पहले हम चारों साथ हो गये। दिल्ली से आये एक प्रौढ़ युगल हमारे साथ–साथ चल रहे थे। वे दस वर्षों से प्रतिवर्ष यहां यात्रा पर आते हैं। देवी मां ने शायद हमें अच्छी तरह दर्शन देने के लिये ही उन्हें हमारे साथ जोड़ दिया। हमें भी उनकी बातें मानना एवं उनके साथ चलना अच्छा लगा। भुवन से कुछ पहले गेट पर हमने नीचे से लिये टिकटों पर ग्रुप नं. लगवाये। इसके बाद दिल्ली वाले अंकल–आंटी के मार्गदर्शन में माता मंदिर के सामने की धर्मशाला में जाकर चार खाली तख्ते सामान रख कर रोके।

हमने कटरा रजिस्ट्रेशन काउंटर से ही चार–चार आदमियों के ग्रुप के दो टिकट ले लिये थे। हमारा उद्धेश्य दो बार दर्शन करना था। दो टिकट की योजना मैंने ही बनाई थी पर यहां लगता है कई लोग ऐसा ही करते हैं। दिल्ली वाले परिवार के पास भी दो टिकट थे। हम पूर्व में दर्शन करने के बारे में कुछ अलग योजना बना कर आये थे पर अब सारी योजनायें आंटीजी ने संशोधित कर दी। आंटीजी एक टिकट पर ही ग्रुप नं. लगवाया था जबकि हमने दोनों टिकटों पर एक साथ ग्रुप नं. लगवा लिऐ थे। नये खिलाड़ियों से गलती हो ही जाती है। इसे सुधरवाया भी पुराने खिलाड़ियों ने। इसके लिये हमें रात में पुनः गेट पर आना पड़ा। साबू ने निवेदन किया, ''मेरी श्रीमतीजी की तबियत कुछ खराब हो गई है। हम सुबह दर्शन करेंगें। कृपया नया ग्रुप नं. दे दें।'' गेट पर तैनात कर्मचारियों ने बिना अन्य कोई पूछताछ किये 54 नं. काट कर 62 नं. कर पर्ची वापस दे दी। अब हम इस पर्ची से कल सुबह दर्शन कर सकेगें। यात्रा में भी असत्य का सहारा लेना पड़ा। वैसे मुझे लगा यदि साबू यह बात नहीं कहता तो भी शायद यह काम हो जाता। इस तरह हम देवी मां के सायं छः बजे एवं अगले दिन प्रातः चार बजे दर्शन कर सके।

तारीख 4–9–1997 गुरुवार को हम चार बजे भुवन में अपने तख्तों पर सेट हो गये थे। आंटीजी की प्रेरणा से कार्यक्रम बनाया कि आरती के दर्शन किये जायें। पूछताछ से आरती का समय सही पता नहीं लग पाया। किसी ने साढ़े छः, किसी ने साढ़े सात और किसी ने साढ़े आठ का समय बताया। फिर यह पता लगा कि आरती में आम यात्री को शामिल नहीं होने देते। तब हमने छः बजे दर्शन करने की योजना बनाई। सबसे पहले आंटी जी के नेतृत्व में तीनों महिलाओं को स्नान करने भेजा और हम सामानों के पास रहे। इसी दौरान मैंने कंबलों की व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त की। अब रात में यहीं सोना है तो कंबल तो चाहिये ही। पता लगा यहां स्टोर में से सायं सात बजे बाद ही कंबल जारी किये जाते हैं। महिलाओं के स्नान करके आने के बाद हम चाचाजी के नेतृत्व में स्नानार्थ गये। हम स्नानघर मात्र कच्छा–बनियान पहन, तौलिया लपेट कर गये तथा हमारे पास केवल धुले हुये कच्छा बनियान ही हाथ में थे। यहां स्नान की बहुत ही अच्छी व्यवस्था की गई है। महिलाओं के लिये पूर्णतः पृथक स्नानागार है। बहुत सारे नल लगाये गये हैं तथा कपड़े टांगने हेतु सैंकड़ों खूंटियां हैं। पानी बर्फ का सा ठंडा है ही। नहाने में हम तीनों में से कोई भी नहीं हिचका। यहां तेल, साबुन, कांच, कंघा आदि का प्रयोग वर्जित है। नहा कर निकले के बाद रास्ते की रैलिंग पर हमने अपने गीले कपड़े सूखने के लिये डाल दिये। यहां तेज खिली धूप का कुछ देर कुर्सियों पर बैठकर आनंद लिया। बाद में महिलाओं को बुलाकर उनके कपड़े भी यहां सुखवा दिये। यहां बहुत अच्छा दृश्य है पर फोटो खींचना सुरक्षा कारणों से मना है। कश्मीर के आतंकवादियों का डर यहां बना हुआ है।

कुछ ही देर बाद हम हमारे तख्तों पर आ कपड़े पहन तैयार हुये तथा बिल्कुल नजदीक के गेट से ही मंदिर में प्रवेश पा गये। आज अभी यहां लाइन नहीं है। हमारा अहोभाग्य, आज माताजी फुर्सत में हैं। माइक पर आवाजें लग रही है, ''किसी भी ग्रुप वाले यात्री दर्शन कर सकते हैं।'' दर्शनार्थ पहले दरवाजे में घुसते ही हमारी जामा–तलाशी ली गई। प्रसाद एवं पूजा सामग्री की थैलियों को भी खोल–खोल कर देखा गया। मेरे पास अगरबत्ती का पुड़ा था जो बारां से अनिल चौधरी ने माताजी को चढ़ाने के लिये भेजा था, वह भी बाहर ही रखवा दिया गया। थोड़ा आगे बढ़ने पर नारियल जमा करके टोकन दिये गये तथा बाकी पूजन सामग्री भी एक मेज पर रखवा ली गई। माताजी की लाल चुनरी हमने सिर पर बांध ली। इस तरह दरबार में जाने से पूर्व हम पूर्णतः खाली हाथ हो गये। आगे पुनः चैकिंग हुई। महिलाओं की जामा तलाशी के लिये दो महिला पुलिसकर्मी तैनात थी। बड़े हॉल व बरामदों में कई टीवी लगा कर माताजी के दर्शन कराये जा रहे हैं। गुफा में प्रवेश हेतु बनाई विशाल नई सुरंग में प्रवेश देने के पूर्व एक बार पुनः चैकिंग की गई। जर्दा, पाउच, बीड़ी, कंघे, कैमरे, पेन, जैसे सामान सुरक्षाबलों ने विभिन्न जगह यात्रियों से जब्त कर रखवा रखे थे। हमारे अंकल–आंटी के मार्गदर्शन के

कारण हम कोई ऐसा सामान लाये ही नहीं थे। सुरंग मार्ग में ही हमें पंक्तिबद्ध होना पड़ा। अधिकांश भक्त माता का सुमिरन या जयनाद कर रहे थे पर हम दोनों दम्पत्ति बातों में ज्यादा मसगूल रहे। सुदर्शन साबू छोटी–छोटी अनावश्यक बातें उसकी आदत के मुताबिक चाचाजी से पूछ रहा था जो मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। मां के दर्शन कर हमने वहां लगे दानपात्र में बारां के भक्तों द्धारा भेजी गई तथा हमारी भेंट की राशी डाली। इस पवित्र गुफा में माताजी पिंडी के रूप में ही विराजमान है। तीन पिंडीस्वरूप माताजी का वस्त्राभूषण से श्रृंगार कर ऊपर चांदी के छत्र लगाये गये हैं। माताजी के सामने शिवलिंग एवं त्रिशूल है। सभी के हमने दर्शन किये एवं भेंट भी चढ़ाई। वहां बैठे पुजारीजी ने हमें तिलक किया, हमारे प्रसाद को माताजी को छुआकर हमें वापस दिया। एक अन्य पुजारी जी ने सभी को माताजी का खजानारूप में एक चव्वनी के आकार का सिक्का दिया। वापसी के रास्ते में हमने वहां बह रही गंगा के जल से शरीर पर छिड़काव किया तथा एक–एक घूंट पानी पीया। गुफा की छत प्राकृतिक है, यहां सावधानीपूर्वक चलना पड़ता है अन्यथा सिर छत से टकराने या पैर फिसलने का खतरा रहता है। गुफा से वापसी के लिये एक अन्य सुरंग बनाई गई है। सुरंग से बाहर माताजी की मूर्ति तथा सिंह प्रतिमा स्थापित है। यहां भी भक्तगण नमन कर रहे हैं। पास के एक काउंटर से हमें टोकन लेकर नारियल वापस दिया गया। इस प्रकार हमारा माता दर्शन का काम सानन्द सम्पन्न हुआ।

प्रत्येक प्रसिद्ध मंदिर के आसपास अन्य कई देवी–देवताओं के मंदिर स्थापित हो जाते हैं। वैष्णव देवी धाम भी पुजारियों की इस प्रवृत्ति का शिकार होने से नहीं बच सका। यहां रामलक्ष्मणजानकी मंदिर, भैरव मंदिर व हनुमान मंदिर हैं जिन के हमने दर्शन किये। यहां काफी नीचे उतरने के बाद प्राकृतिक रूप से बनी एक गुफा में शिवलिंग स्थापित है। रास्ता कठिन होने के कारण अंकल–आंटी यहां दर्शनार्थ नहीं जाते हैं पर हम आग्रह कर उन्हें ले गये। गुफा में कोई व्यवस्था संभालने वाला नहीं था अतः यात्री बहुत देर तक गुफा में रुक रहे थे। आने–जाने के एक संकरा मार्ग मात्र ही है। लंबी लाइन के कारण यहां दर्शन करने में हमें आधा घंटा लग गया। इस गुफा में जगह–जगह से पानी टपकने के कारण हम भीगे भी। यहां भी एक जलधारा बह रही है। यह प्राकृतिक गुफा मुझे बहुत अच्छी लगी। कभी मां के दरबार में भी ऐसा ही प्राकृतिक वातावरण था पर यात्रियों की बढ़ती भीड़ तथा आतंकवादियों के खौफ से काफी निर्माण करने पड़े। शिवमंदिर से चलकर वापस ऊपर आने में मुझे भी थकान आ गई। धर्मशाला में अपने तख्तों पर पहुंचने से पूर्व हम रास्ते में रेलिंग पर सुखाये हमारे कपड़े भी उठा लाये। दो घंटे तक असुरक्षित रहने के बाद भी कुछ खोया नहीं था।

धर्मशाला के तख्तों पर सामान छोड़ दर्शनार्थ जाते समय हम हमारे बगल के तख्त पर लेटे यात्री से ध्यान रखने का निवेदन करके गये थे। हमारे लौटने पर उसने बड़ी राहत महसूस की। सात बजे

दर्शनार्थियों के आरती के कारण माताजी मंदिर के गेट बंद कर दिये थे पर हमारी दिल्ली वाली आंटीजी ने न जाने क्या व्यवस्था कर रखी थी? वे तुरंत ही आरती में शामिल होने के लिये वापस चली गई। हमारे लिये यह रहस्य बना रहा। चाचाजी ने बताया कि वे बात करके आई है। उन्हें अन्य लोगों के साथ अभी हॉल में बिठा दिया जायेगा फिर वे आरती के उपरांत साढ़े आठ बजे वापस आयेंगी। हम अपनी आगे की व्यवस्थाओं में लग गये। हमने कंबल के लिये गेट नं. एक के पास पैसे जमा करवाये। मुझे हमारी धर्मशाला के भवन का नाम तथा कंबल काउंटर नं. याद नहीं रहा और मैंने सरस्वती भवन की खिड़की पर पैसे जमा करवा दिये। सौभाग्य से सरस्वती भवन भी हमारे भवन के पास ही है और हमें कष्ट नहीं उठाना पड़ा। मैंने चार व्यक्तियों के बीच पांच कंबल पांच सौ रु. जमा करके निकलवाये। हमारे साथी अंकल जी ने दो व्यक्तियों के बीच चार कंबल जारी करवाये। यहां कंबल जारी करने की सुरक्षित तथा सुविधाजनक व्यवस्था है। कंबल लेने की संख्या पर भी कोई पाबंदी नहीं है।

अंकल–आंटी द्वारा समझाने पर हम दर्शनोपरांत कन्यायें जिमाने के लिये आधा किमी वापसी रास्ते पर चल कर आये। प्रशासन ने भवन के आसपास की सब दुकानें हटवाकर आधा किमी दूर लगवा दी है। यहां हलवाई की दुकानों के आगे बहुत सी लड़कियां तथा कुछ लड़के सड़क पर बैठे हैं। अंकल जी ने एक हलवाई की दुकान से पच्चीस रु. में दो पुरी तथा हलुवे के दस पैकिट बनवाये तथा एक–एक रु. दक्षिणा रखकर यहां बैठी नौ कन्याओं तथा एक लड़के को दे दिये। नौ कन्यायें दुर्गा के नौ अवतारों की प्रतीक तथा एक लड़का भैरव बाबा या लांगुर का प्रतीक माना जाता है। हमने भी चाचाजी के देखादेखी ग्यारह पैकिट बनवाये व सब लड़कियों में ही बांट दिये। हमें इस बात का ज्ञान उस समय तक नहीं था। हमने उसमें से स्वयं के ग्रहण करने हेतु प्रसाद भी बचाकर नहीं रखा। कन्यायें जिमाने के बाद अंकल–आंटी तो भूख न होने की बात कह कर बिना भोजन किये ही धर्मशाला में आ गये और हम चारों रास्ते में माता वैष्णव देवी शेरीन बोर्ड द्वारा 'न लाभ न हानि' व्यवस्था से संचालित यहां के एक मात्र भोजनालय पर रुक गये। यहां अमुमन पूरी–सब्जी तथा चावल–राजमा बनता है पर अभी मात्र चावल–राजमा ही उपलब्ध है। भोजन हेतु पहले पैसे चुकाकर टोकन लेना पड़ता है। टोकन की खिड़की पर सिनेमाघर में पहले दिन लगने वाली नई फिल्म पर पड़ने वाली भीड़ का सा आलम था। बड़ी मुश्किल से हाथ फंसाकर मैंने चौदह रु. में दो प्लेट चावल का टोकन लिया। डिस्पोजल कागज की प्लेटों में चावल के ऊपर राजमा की सब्जी डालकर दी गई। पास के भोजन कक्ष में खड़े होकर हमने तुरत–फुरत खाना खाया एवं कूलर का ठंडा पानी पीया। इस भोजन से हमारा पेट नहीं भरा अतः हम पुनः कोई आध किमी चल कर बाजार आये और एक होटल में बैठ तीन प्लेट सब्जी के साथ बारह तंदूरी रोटियां खाई।

खाना खाकर हमारे निवास आ, हमने प्रातः की योजना पर विचार शुरु किया। आंटी जी ने बताया कि वे सुबह फिर दर्शन करेंगें, उनके पास एक टिकट और है तो हमने भी झट से अपना दूसरा टिकट बता दिया। आंटी जी ने फिर कहा कि सुबह दर्शन के लिये टिकट पर ग्रुप नं. बदलवाना पड़ेगा। आपने आते समय जो ग्रुप नं. लगवाया था, उससे सुबह दर्शन नहीं करने देंगे। अंकल–आंटी को भी अपने दूसरे टिकट पर ग्रुप नम्बर डलवाना था अतः उन दोनों के साथ सुदर्शन व मैं भी चला गया। दोनों टिकटों का काम करवाकर धर्मशाला आने तक यहां यात्रियों की संख्या बहुत ज्यादा हो गई। दोनों हॉल तो भर ही गये उनके सामने के बरामदों तथा रास्तों तक में यात्रियों ने बिस्तर लगा लिये। पेशाब करने के लिये आने–जाने में भारी तकलीफ रही।

आज रात किसी को भी अच्छी नींद नहीं आई। सुबह जल्दी उठने की चिंता तथा यात्रियों की आवाजाही से खलल रहा। आज 5–9–1997 शुक्रवार अंकल–आंटी जी के उठने के बाद प्रातः सवा तीन बजे हमें भी उठना ही पड़ा। हमने स्नान किया। अंकलजी व मेरी पत्नी की स्नान करने की हिम्मत नहीं हुई। पूरे भुवन में बिजली की जगमग रोशनी से हमें कोई परेशानी नहीं हुई। चार बजे हम दर्शन की लाइन में लग गये। इस समय भी भीड़ नहीं है। टोकन नं. आदि भी नहीं देखे गये। दिल्ली वाले अंकल–आंटी जी पुनः अलग–अलग पूजा ले गये। हमने कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि और लोगों की है। हम तो खाली हाथ मां के दरबार में गये और मां का खजाना लूट लाये। दर्शन करके लौटते ही हमने वापसी यात्रा की तैयारी शुरु की। इसी क्रम में मैं कम्बल जमा करवाने गया। वहां सौ रु. दान की रसीद भी कटवाई। वापसी यात्रा में हमने भैरों बाबा के दर्शन करना तय कर रखा था। अभी अंधेरा है तथा हमें घने जंगल में हो कर गुजरना है। अंकल–आंटी के होते हुये हमें रास्ते आदि की बिल्कुल चिंता नहीं थी। रास्ता सीधा पहाड़ी पर चढ़ता है। यहां हमें बीस रु. में एक पिठ्ठू मिल गया जिसे हमने हमारे चारों बैग थमा दिये। अब पिठ्ठू ही हमारा मार्गदर्शक बन गया। कुछ लाइटें बंद होने के कारण हमें घनघोर अंधेरे में से भी गुजरना पड़ा पर यहां कोई डर नहीं है। न तो चोर–उच्क्कों का; न कीड़े–कांटे का और न ही जंगली जानवर का। बस रास्ते पर पैर सावधानी से रखना पड़ता है। हम सामान्य गति से बढ़ते रहे। कुछ आगे आठ–दस नौजवानों का झुंड और हमारे साथ हो गया। मात्र एक स्थान पर पांच मिनट करीब आराम के लिये रुके। बाबा भैरों नाथ के दरबार में पहुंचते–पहुंचते उजाला सा हो गया। वहीं एक दुकान से पूजन सामग्री ले भैरोबाबा के दर्शन किये। यहां फोटोग्राफी पर प्रतिबंध है। एक यात्री ने फोटो ले लिया तो वहां के वाचमैन ने कैमरा ले कर पूरी रील निकाल कर खराब कर दी। इसके बाद वह वॉचमेन बड़बड़ाने लगा, ''आतंकियों का इतना खतरा है फिर भी नहीं मानते। हम हिन्दुस्तानी एक–एक रु. में बिक जाते हैं।'' मुझे उसकी यह बात बहुत खली और मैं उससे उलझ गया।

दोनों में परस्पर बहस होने लगी। अंत में मैं चुप हो अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया और वह पागल की तरह बड़बड़ाता रहा। रास्ते में हमने प्रकृति के दो फोटो लिये। सुदर्शन रास्ते में मेरे से वाचमैन से उलझने के मामले में नाराज हुआ। फोटोग्राफी के चक्कर में हम चारों पीछे रह गये तथा हमारे साथ चल रहे अंकल–आंटी व अन्य यात्री आगे निकल गये। रास्ते में बब्बर शेर की तरह अराल वाले भयंकर से दिखने वाले बंदरों की पूरी जमात बैठी थी। हम ऊपर से नीचे तक कांप गये। चारों बजरंग बली का नाम जोर–जोर से जपते निकले। फोटो खींचने लायक सीन था पर हिम्मत नहीं थी। बंदरों से दूर होने पर हमारी जान में जान आई। इस पूरे रास्ते उतार है अतः हम तेजी से चल सांझी छत पहुंच गये। भैरों मंदिर से गायब हुये दिल्ली वाले अंकल–आंटी भी हमें फिर नहीं मिले।

भैरों घांटी से सीधा उतार है पर उतार भी इतना आसान नहीं होता। ज्यादा ढलान हो तो पंजों पर विशेष जोर पड़ता है। चढ़ाई में जहां पिंडलियां दर्द करती है वहीं उतार में पंजे एवं घुटने दर्द करते हैं। सांझी छत आते–आते हमें उतार की थकान आ गई। कुछ देर रुक, एक मानव निर्मित छत से घांटियों एवं हरियाली के फोटो लिये। यहां दो हैलीपेड भी बने दिखाई दिये। अभी तक सूर्योदय हो गया था पर बादल एवं ऊँची पहाड़ियों के कारण मार्ग में धूप नहीं थी। सांझी छत पर कुछ देर आराम कर कूच किया तो सीधे जाकर अर्द्धकुंवारी रुके। साबू परिवार पगडंडी वाले रास्ते से उतरा जबकि हम दोनों पति–पत्नि ने यथासंभव सीढ़ीयों से उतरना पसंद किया।

अर्द्धकुंवारी पहुंचते ही हमने अपने सारे सामान क्लॉकरुम में डाल दिये। करीब एक घंटा हॉल के फर्श पर बिना कुछ बिछाये बैठे–लेटे रहे। कुछ झपकी सी भी आई। बीच–बीच में चुटकलेबाजी का दौर भी चला। हमने आज आराम करने हेतु कटरा में ही रुकना तय कर लिया था तथा हॉटल के चेकआउट टाइम के हिसाब से हम बारह बजे कटरा पहुंचना चाहते थे। भरपेट आराम के बाद कुछ नीचे उतर हमने शरीन बोर्ड के एक हॉटल में भरपेट सस्ता व अच्छा नाश्ता किया। कुछ देर और आराम कर पानी पेशाब से निबट हमने लॉकर में से सामान निकाल, आगे की यात्रा शुरु की। वापसी यात्रा में हम पूरे मस्ती में थे। कई जगह ढोलक की थाप पर नृत्य भी किया। कई जगह रुक नये–नये आइटम खाते–पीते, साढ़े ग्यारह बजे हम अपने हॉटल पहुंचे। बाणगंगा से हॉटल तक का रास्ता हमने ऑटोरिक्शा में बैठ कर तय किया।

एक नये बने हॉटल आकाशगंगा में हम अपने सामान माताजी के दर्शन करने जाने से पूर्व छोड़ गये थे। हॉटल वाले वापसी में एक दिन यात्री के रुकने की उम्मीद पर मुफ्त सामान रख लेते हैं। परसों यह हॉटल पूर्णतः खाली पड़ा था आज हमें छोटे कमरे ही मिल सके। नहाने–धोने के पानी की भी समस्या रही। पेंट–शर्ट तो हमने धोबी को दे दिये पर महिलाओं ने अपने सारे कपड़े धो छत पर सुखा

दिये। बादल व पानी के कारण कई बार कपड़े उठाने–सुखाने पड़े। भोजन करने हॉटल पर गये पर बहुत घटिया हॉटल मिला। खरी–खोटी सुनाने के बाद भुगतान किया। तीन बजे गहरे बादल छा गये थे। छत से सारे कपड़े उतार कर कमरे में सुखाये एवं दो घंटे नींद निकाली।

सो कर उठने के बाद हाथ–पैर बुरी तरह अकड़ गये। मेरे अलावा तीनों ने औषधियों का सेवन किया। शाम को फिर घूमने निकले। सुदर्शन की पत्नी के पैर में एक जगह ज्यादा दर्द था। हम डॉ. को बताना चाहते थे पर भाभीजी ने मना कर दिया। दर्द शायद सहनीय सीमा में ही था। चलो मेडिकल स्टोर वाले से ही कुछ ले लेंगे। समय गुजारने के लिये सारे कटरा के बाजार का चक्कर लगाया। धर्मशालाओं एवं होटलों में जाकर कमरे देखे तथा दरें पूछी। धर्मशाला के बाहर की एक बड़ी सी दवाओं की दुकान से पैरों के दर्द को मिटाने वाला मालिश करने का तेल खरीदा। खराब से सेव, पताशी, चाट खाई। सुदर्शन ने बारां फोन लगाकर उसके चंडीगढ़ निवासी बुआजी का पता लिया। फिर अमृतसर व चंडीगढ़ सुदर्शन ने अपने रिश्तेदारों से बात की। दोनों जगह से हमें आमंत्रण मिले। हमने बस स्टैण्ड जाकर पत्नीटॉप जाने वाली बसों एवं पैकेज ट्यूर पर ले जाने वाली टैक्सियों की भी जानकारी ली। लक्जरी बस 130 रु. सवारी में पत्नीटॉप के लिये सुबह जाकर शाम को वापस कटरा लाकर छोड़ती है। हमारा विचार पत्नीटॉप दो तीन दिन रुकने का बना अतः हमने लाइन की बस से ही निकलना तय किया। इसी दौरान हम खाने के अच्छे होटल भी देखते रहे। चौराहे पर स्थित एक हॉटल में पहली मंजिल पर जाकर खाना खाया। पूर्ण संतुष्टि मिली। अफसोस यह रहा कि तीन समय तक हम उस चोर के यहां क्यों खाना खाते रहे? वापसी में साबू की अखरोट खरीदने की इच्छा थी पर मैं अडंगा लगाता रहा। एक जगह आइस्क्रीम खाई। धोबी से कपड़े लेने थे पर वह दुकान बढ़ा गया। होटल के बाहर ही एक मालिश करने वाला मिल गया। हम उसे मालिश करवाने के लिये कमरे में ले आये। हॉटल मैनेजर को न जाने कैसे भनक लग गई। वह गुस्से से उबलता हुआ आया और उस मालिशिये को गर्दन पकड़, धक्का देते, गालियां निकालते हुये बाहर निकाल दिया। फिर हमारे से बोला, ''ऐसे चाहे जिस आदमी को कमरे में ले आओगे, कुछ सामान गायब हो गया तो किसकी जिम्मेदारी है? आपको मालिश करवानी थी, आप हमारे से कहते।'' हमने अपनी गल्ती मानी और दूसरा मालिशिया बुलवाने से भी मना कर दिया। एक कमरे में घुस कोई घंटाभर ताश खेली। फिर सोने के लिये अपने–अपने कमरे में चले आये। हमने अपने हाथ–पैरों की सरसों के तेल से जोरदार मालिश कीं। हमें लग रहा था हमारे दर्द करते बदन का यही इलाज है। रात हमें काफी देर बाद नींद आई।

तारीख 6–9–97 शनिवार

आलस्य करते देर से उठे। नहा–धो कल देखे बढ़िया होटल पर नाश्ता करने गये। आज होटल का अनुभव खराब रहा। मात्र परांठे व छोले ही नाश्ते में थे। छोले में दो मोटे–मोटे कंकर निकले तथा पैसे भी बहुत ज्यादा लगे। रास्ते में धोबी से कपड़े लिये। उसे ड्राइक्लिन के लिये कपड़े दिये थे जो उसने धो दिये। कपड़े अभी तक सूखे नहीं हैं, गीलों पर ही प्रेस करवा ली। आज हमें कटरा छोड़ना है और अब कपड़े सूखने का इंतजार नहीं कर सकते। हमने उसे भी खरी–खोटी सुनाई। हम होटल में आ प्रस्थान की तैयारी करने लगे। हमारे पैर अभी तक थकान से अकड़ रहे हैं। रेणु भाभीजी ने कल खरीदे हुये तेल की अपने पैरों में मालिश की एवं शीशी मेरी पत्नी को दे दी। पत्नी ने मालिश करने के बाद मुझ से भी तेल लगा लेने का आग्रह किया। अब पेन्ट कौन उतारेगा, चलो पत्नीटॉप पहुंच कर ही लगा लेंगे। कुछ आलस्य में ही मैंने तेल नहीं लगाया। मेरे वैष्णवदेवी यात्रा से लौटते समय गिर जाने से हथेली में मामूली चोट आ गई थी, मैंने केवल वहीं उस तेल का मालिश कर लिया। मेरी हथेली में नुकीले पत्थर से टकराने के कारण हल्का सा कालापन तथा सूजन आ गई है। 'छोटी–मोटी बीमारियां अपने आप ठीक होती है' इस विश्वास के कारण मैंने हाथ के इलाज के बारे में सोचा तक नहीं और दो दिन में बहुत कुछ आराम भी हो गया। यह तेल मालिश भी सहज उपलब्ध होने पर अनमनेपन से ही कर ली।

दस बजे होटल खाली कर एक कुली को सामान लदवाकर हम पत्नीटॉप जाने के लिये कटरा बस स्टैण्ड पर आ गये। यहां से उधमपुर के लिये तो आराम से बस मिल रही थी पर सीधी बस के इंतजार में हमने पौने ग्यारह बजा दिये। हार कर उधमपुर की बस में ही सवार हुये। यात्री कम होने के कारण कई बसें रद्ध हो गई हैं। उधमपुर तक की यात्रा में बहुत गर्मी हो गई। रास्ते में ही संभवतः गर्मी व पसीने के कारण महिलाओं के पैरों में लगा तेल बहुत जलने लगा। कटरा से उधमपुर तक दोनों महिलायें तैल से उठी जलन से तड़पती, कसमसाती, तेल तथा मेडिकल स्टोर वाले में गालियां निकालती रही। उधमपुर में बस से उतरने के बाद ठंडी हवा लगने से कुछ आराम मिला। बस कंडक्टर ने हमें उधमपुर बस स्टैण्ड पहुंचते ही बगल में खड़ी बस में बिठा दिया जो सनासर तक जाती है। हमें सीटें भी आगे की मिल गई। यहां हमने महिलाओं को तौलिये गीले करके दिये जिससे उन्होंने बस में बैठ कर अपने पैरों का तेल पोंछा। उम्मीद के विपरीत इस यात्रा में भारी कष्ट आया। सवारियां भरने के चक्कर में बस घंटाभर बाद चली। उधमपुर में पीने का पानी भी बमुश्किल मिल सका। छोटी–मोटी चीजों का नाश्ता कर लिम्का पी। पूरी बस में सामान तथा सवारियां ठसाठस भर गई। धूप में खड़ी बस में हमारा गर्मी के मारे बुरा हाल हो गया। दोनों महिलाओं की पैरों में जलन की समस्या गर्मी के साथ

बढ़ती रही जो ठंडे इलाके चेलसी में पहुंच कर दूर हुई। रास्ते में साबू को महिलाओं का कोपभाजन भी बनना पड़ा। हम इस विषय पर ही मजाक कर रहे थे।

रेणु भाभीजी नाराज होकर बोली, ''आपने नहीं लगाया वरना पता लगता, मिर्ची भी इतनी नहीं जलती है।''

मैंने पूछा, ''दर्द हो रहा है क्या?''

मेरी पत्नी बोली, ''दर्द तो नहीं हो रहा, जलन लग रही है।''

''मतलब दर्द तो मिट गया। मेडिकल स्टोर वाले की कोई गलती नहीं है। उसने दर्द मिटाने का ही तेल दिया था, अब जलन मिटाने की दवा ले लेंगे। वैसे यह सब सुदर्शन की कारस्तानी है। पत्नीटॉप पहुंच कर सुदर्शन के पूरे शरीर में इसी तेल की मालिश करेंगे। मैं भी आपका साथ दूंगा।''

मैंने बदला भांजने के लिये महिलाओं को भड़काया। इस तरह यह मालिश का तेल पूरी यात्रा में ही मजाक का विषय बना रहा। कोई कहता मैं थक गया तो तुरंत जवाब मिलता, ''अभी होटल चल कर तेल की मालिश कर लेना।''

''चिंता मत करो खूब घूमो, अपने पास मालिश का तेल रखा हुआ है।''

भाभीजी ने तो तेल की शीशी के हाथ भी लगाने से मना कर दिया। पूरी यात्रा में मेरे पास रखी शीशी वापस बारां ही आ गई। किसी ने प्रयोग नहीं किया।

बहुत कठिनाइयों के बाद साढ़े तीन बजे पत्नीटॉप पहुंच सके। बस स्टैण्ड पर उतरते ही हॉटलों के दलालों ने हमें घेर लिया। एक दलाल के साथ जाकर ढाई सौ रु. में दो कमरे पास में ही बुक किये। अटैच लेट–बॉथ, डबलबैड, गीजर, टी.वी आदि सभी सुविधायुक्त। यहां कमरों में पंखा–कूलर फिट ही नहीं हैं। यह जगह 2050 मीटर समुद्र तल से ऊँचाई पर स्थित है, यहां वर्ष में कभी भी गर्मी नहीं लगती है। अभी ऑफ सीजन है अतः कमरे बहुत कम दरों में मिले हैं।

मेरे तीनों साथियों ने बस अड्डे पर चाय पी फिर हम सामान उठवाकर कमरों में आ गये। गर्म पानी से स्नान कर, हमारे पास का नाश्ता किया। यहां पास के भोजनालय पर तंदूर सात बजे शुरु होता है। हम पांच बजे सायं घूमने निकल गये। पास ही स्थित एक गार्डन देखते हुये आगे बढ़े। यहां जे.के. टी.डी.सी. का सुन्दर सा हॉटल दिखाई दिया। टहलते हुये हॉटल में पहुंच गये। वहां एक वॉचमैन तैनात था। उसे साथ ले जाकर हॉटल के कमरे देखे। यहां चार सौ साठ रु. प्रति कमरा रेट है, अभी तीस प्रतिशत छूट चल रही है। कमरे बहुत ही अच्छे हैं। दरवाजे खिड़कियों में लगे कांचों में से सदैव बाहर के सुहाने दृश्य दिखाई देते हैं। हॉटल देख ओर आगे बढ़े तो बहुत ही अच्छा सुव्यवस्थित घास का मैदान दिखाई दिया। यहां बैठ कर हमने फोटोग्राफी भी की। फिजां में धुंध फैलने लगी थी। तबियत

बाग–बाग हो गई। रोमांटिक मूड बना। हमारे साथ हमारी पत्नियां थी पर ऐसे अवसर पर वे प्रेयसी नहीं बन सकी। बिल्कुल फिल्मी शूटिंग जैसा माहौल था। ऊपर के रास्ते पर से बहुत सारी चुलबुली स्कूली छात्रायें आ रही थी। हमारे नजदीक आने पर मैंने सुना एक लड़की गा रही थी, ''फूल आहिस्ता से तोड़,''। मैने उससे भी नाजुक आवाज में गाना पूरा किया, ''फूल बड़े नाजुक होते हैं।'' एक ठहाका लड़कियों ने लगाया और एक हमने। हमारी पत्नियां साथ है और वह उम्र भी गुजर गई है पर क्या करें माहौल ही ऐसा बन गया। प्रेमियों के घूमने व हनीमून मनाने वालों के लिये सर्वोत्तम इस जगह पर मैं रोमांचित होता, लगातार पत्नी को छेड़ता रहा पर सकारात्मक जवाब नहीं मिला।

दिन डूबने पर हम वापस मुड़े। धुंध के साथ हल्की बारिश भी आ गई। पास वाले बाग में लकड़ी से निर्मित एक कलात्मक रेस्टोरेंट बना हुआ है। हम उसमें घुस गये। सभी लड़कियां भी उसी में पूर्व में ही घुसी हुई थी। साबू आदत मुताबिक उन पर टीका–टिप्पणी करता रहा। इस दौरान मैं असहज सा हो उठा। मैंने हमारी महिलाओं को कहा,

''कहीं चप्पल पड़ने की नौबत आ जाये तो संभाल लेना।''

भाभीजी ने तो चुनौती भरे शब्दों में कहा, ''अरे, हमारे होते हुये किसकी हिम्मत है ऐसा करने की।''

''फिर तो बोलने दें।''

मैं भाभी जी से पुनः कहता हूं कि इसे थोड़ा कंटोल में रखें। भाभीजी हंस कर टाल देते हैं। उन्हें पूरा भरोसा है। बस थोड़ी चुहलबाजी कर लेते हैं। लड़कियों की बातें बंद होने के बाद सुदर्शन ने रेस्त्रां में कीमतें पूछी। कॉफी 11रु. की है। नहीं पीनाजी। 15रु. में एक अंकल जिप्स की थैली ले ली। मुझे तो इसकी कीमत भी पता नहीं है। साबू ने ही बताया कि सात या आठ रु. में अपने यहां मिल जाती है। खैर हम चारों ने मिल कर वे चिप्स पंद्रह रु. के मजे ले–लेकर ही खाये। आसमान से टप–टप टपकता झूर, कुछ सांझ से व कुछ धुंध से मद्धिम पड़ती रोशनी, गहरी खाइयों में सड़क पर दौड़ते वाहनों की भूं–भूं, सामने हरे–भरे बाग में खिलते रंग–बिरंगे फूल और आसपास मंडराती कश्मीरी तितलियां, वातावरण में फैली वनों की गीली मिट्टी सनी बास, ऊँचे–ऊँचे देवदार वृक्षों के सरर–सरर करते झुंड और इन सब के बीच हल्की सी सर्दी से ठिठुरते–मुस्कराते हम दो जवान जोड़े। फिल्मों में भी तो ऐसे ही दृश्य होते हैं।

ये सब लड़कियां आसपास के गांव के किसी स्कूल की थी जो सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु कुद या बटोत आई होंगी। वहां से समय निकाल यहां घूमने आ गई। उस रेस्टोरेंट में बैठे हुये उन्होंने प्रतियोगिता में गाये जाने वाले देशभक्ति के गीतों का रिहर्सल किया। सुदूर कश्मीर में वतन

पर जान न्यौछावर कर देने की भावना वाला मार्मिक गीत, वह भी सधी–सुरीली आवाज में सुन मेरे मन से मजाक की भावना तिरोहित हो गई एवं इन बच्चियों के प्रति श्रद्धाभाव पैदा हो गया। यहां कश्मीर में भी राष्ट्र के प्रति वैसी ही श्रद्धा दिखाई दे रही है जैसी हमारे राजस्थान में। लगा कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत एक है एवं एक ही रहेगा। थोड़ी देर बाद रेस्त्रांवाला अपनी दुकान बंद कर चला गया। लड़कियां भी बाग को उजाड़ कर अपनी मास्टरनी के साथ चली गई। अब यहाँ हमें भी बैठ कर क्या करना था?

इस रेस्टोरेंट से पश्चिमी ओर बहुत सुहाना पहाड़ी दृश्य दिखाई दे रहा था। राजमार्ग के दो मोड़ यहां से नजर आ रहे हैं जो बटोत की ओर जा रहा है। पत्नीटॉप जनसंख्या की दृष्टि से छोटा स्थान है। इसके पूर्व में कुद तथा पश्चिम में बटोत अच्छे कस्बे हैं। पत्निटॉप से दक्षिण की ओर एक रास्ता, पक्की सड़क, पहाड़ के माथे पर चलती हुई; नाथाटॉप होती हुई; सानासर तक जाती है। नाथाटॉप यहां से बारह किमी है तथा पत्निटॉप से भी ज्यादा ऊँचाई पर है। नाथाटॉप से सात किमी उतार पर सानासर है जो शीतकालीन खेलों के लिये विश्व प्रसिद्ध मैदान है। श्रीनगर में अशांति के बाद यहां के प्रशासन ने इस नये पर्यटन स्थल के विकास पर ज्यादा जोर दिया है। यहां के लोगों ने सानासर को मिनी गुलमर्ग का नाम दिया है। हमारे मन में सानासर देखने जाने की ललक पैदा हुई। मात्र एक बस ही शाम को तीन बजे जाती है और वही प्रातः वापस आती है। घोड़े भी एक दिन में सैर करवाकर ला सकते हैं। सबसे अच्छा साधन तो टैक्सी ही है जिसका सुबह ले जाकर शाम को वापस लाने का मात्र 36 किमी का किराया 600 रु. है। अभी वहां बर्फ के खेल तो हो नहीं रहे, हमने इतना खर्च कर जाना उचित नहीं समझा। यहां के निवासियों ने बताया कि सुबह मौसम साफ होगा तो हम आपको दोनों जगह यहीं से बता देंगें। साढ़े सात बजे हमारे होटल के पास के ढाबे में जाकर खाना खाया। आलू व पत्तागोभी की सब्जी, दाल, कड़ी, चावल, दस बारह तंदूरी रोटियां व सलाद। अन्य कोई सब्जी, पापड़, दही आदि यहां था भी नहीं।

''अब ऑफ सीजन है। कोई ग्राहक तो आता नहीं, ज्यादा बनाकर क्या करें?''

होटल मालिक ने सफाई दी। स्वाद वैसे ठीक बन गया था फिर हमने मक्खन भी लगवा लिया था। पेट भरने के बाद चारों एक कमरे में बैठ ताश (दहला कोट) खेले। बाजार से खरीद कर लाये हुये टमाटर खाये तथा सुबह की योजना बनाई। हमारे पास पत्नीटॉप में कल घूमने के तीन विकल्प थे। पहला टैक्सी– 250 रु.। दूसरा घोड़े– कुल चार घोड़ों के 240 रु.। तीसरा पैदल–मुफ्त। हमने घोड़े से ही घूमना पसंद किया। हॉटल के लड़के से प्रमुख देखने योग्य स्थानों की जानकारी ली एवं उसे ही घोड़े करने के लिये कह दिया। हम अपने–अपने कमरों में जाकर सो गये। कोई आध घंटे बाद मैंने

बाहर कुछ शोर सुना। खिड़की खोलकर देखा तो पता लगा कि साबू होटल वाले से एक अतिरिक्त कंबल मांग रहा है। मैंने ये दोनों कमरे 300 की जगह 250 रु. में बड़ी मुश्किल से लिये थे। मैं उठा तो साबू ने बताया कि देखो दस रु. कंबल के मांग रहे हैं। साबू पूरा नाराज हो चुका था तथा पूर्णतः बहस करने के मूड में था और मैं शांति से सोना चाहता था। मैंने साबू को समझाया और अपने सामानों में से ओढ़ने के चादर निकालकर सोने की सलाह दी। अभी मुझे सोये आध घंटा ही हुआ था कि हॉटल का मालिक आया और मुझ से कहने लगा कि जितने जरूरत हो कंबल और ले लो। मैंने उसे मना कर दिया। हॉटल मालिक फौजी जाट था, देर से समझ पाया कि इस व्यवहार पर हम सुबह ही होटल बदल लेंगें। कुछ भी हो इसके बाद मुझे तो सुबह छः बजे तक अच्छी नींद आई।

7–9–1997 रविवार

हम सुबह सात बजे तक नहा–धो निबट घूमने जाने के लिये तैयार हो कमरों के बाहर आ गये। आज हमने सामानों के अपने–अपने पृथक बैग तैयार किये। चारों के रैनकोट, तौलिये, लुंगी, साबुन, कांच–कंघा, ताश आदि सामान रखे। रातभर से मौसम बिगड़ रहा है। अभी भी भारी धुंध पड़ रही है। पांच–सात कदम बाद का भी कुछ दिखाई नहीं दे रहा। ऐसा गहरा कोहरा–धुंध मैंने पहले कभी नहीं देखा। हमारे बाहर आने तक पत्नीटॉप सो रहा था। टहलते हुये बस स्टैण्ड तक आये। साबू का प्रिय चायवाला भी अभी नहीं आया था। बस स्टैण्ड पर शेड में बैठ ठिठुरते हुये कुछ देर ढलान का नजारा देखा। कोई आता–जाता नजर नहीं आया तो हारकर वापस कमरे में आ बैठे और ताश खेलने लगे। साढ़े आठ बजे दुबारा बाहर निकले तब तक यहां जाग हो गई थी। धुंध में दृश्यता भी कुछ बढ़ गई थी। आश्चर्य की बात तो यह लगी कि हमारे इतने प्रचार के बावजूद अभी तक किसी घोड़े वाले ने हमारे से सम्पर्क नहीं किया था। हम घोड़ों के बारे में पूछताछ करते हुये बस स्टैण्ड तक आ गये। हमारा चाय वाला आ गया था। तीनों ने चाय ली और मैंने तीन चाय के बराबर गिलास भरकर दूध पीया। यहां एक ऑटोवाले ने सस्ते में और कम समय में घुमाने का लालच देकर हमें पटाना चाहा। हम नहीं माने तो उसने कह दिया कि आज घोड़े आये ही नहीं है। इसके बावजूद हम टहलते हुये ऊपर गार्डन में होते हुये टी.डी.सी के होटल के सामने पहुंच गये। वहां हमें एक घोड़ेवाला मिल गया और उसी ने तुरंत ही साठ–साठ रु. में तय कर तीन घोड़े और बुलवा लिये।

हमारे काफिले में दो घोड़ियां और दो घोड़े थे। चार व्यक्ति उनकी रास पकड़ कर हमारे साथ चल रहे थे। हमारे बैग भी उनके ही कंधों पर थे। चारों व्यक्ति मुझे अफगानी आतंकवादी जैसे नजर आ रहे थे। मैंने पूछ ही लिया,

''कहां के रहने वाले हो?''

उनमें से एक पढ़ा–लिखा नजर आ रहा था। उसने शायद मेरे चेहरे का खौफ भांप लिया था और वह स्वयं के बारे में बताने के लिये तैयार बैठा था।

''बाबूजी हम कश्मीरी हैं और पक्के हिन्दुस्तानी हैं। हमारा काम घोड़े, बकरियां व मुर्गियां पालना ही है।''

मैंने कहा, ''बक्करवाल हो क्या?''

''हां, बाबूजी''।

''अमरनाथ गुफा की खोज आपके पुरखों ने ही की थी न? वहां के चढ़ावे में से आप को अभी भी हिस्सा मिलता है ना?''

मैं शायद उसकी जानकारी से कुछ ज्यादा ही कह गया। वह हक्का–बक्का रह गया।

''पता नहीं बाबूजी। आप अमरनाथ हो आये क्या?''

''हां, तीन साल पहले गया था।''

इस तरह थोड़ी देर बोलने–बतियाने से हमारा डर कम हुआ। उसने हमें जानकारी दी कि दो महीने बाद वे लोग जम्मू या पंजाब चले जायेंगे। उनका माल यहां नहीं बिकता है। घुड़सवारी से कमाना उनका मुख्य धंधा नहीं है। वे तो चार महीने चराई के लिये यहां आते हैं। मैंने मन ही मन समझ लिया– मुर्गे, अंडे, मांस, ऊन आदि ही इनका व्यापार है।

घोड़ेवाले हमें लेकर सबसे पहले नागदेवता के मंदिर पहुंचे। इस बीच हम हरे–भरे घास के मैदान, ऊँचे–नीचे पहाड़ी रास्तों, देवदार के घने झुरमुटों के बीच से गुजरे। रास्ता इस पहाड़ी की सबसे ऊँची जगह से निकला। इन घोड़े वालों की टापरियां भी रास्ते में पड़ी जहां वे अपने बच्चों से बोले–बतियाये। रास्ते में ही जे.के.टी.डी.सी. (जम्मू कश्मीर ट्यूरिस्ट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन) की बहुत सारी हट्स (झोंपड़ियां) बनी हुई हैं। इतनी सारी हट्स इस वीराने में देखकर मुझे बहुत ताजुब्ब हुआ। जानकारी ली। एक हट में दो कमरे, किचन, लैट–बाथ है। खाने पकाने के पूरे सामान तथा पर्याप्त बिस्तर यहां उपलब्ध रहते हैं। बस राशन–कपड़े और रकम लाओ और यहीं गृहस्थी बसा लो। किराया छः सौ से नौ सौ रु. प्रति हट प्रतिदिन। सीजन में एक भी हट खाली नहीं रहती। घोड़ेवाले गाइड का भी काम करते हैं। हमें पूरी जानकारी उन्हीं से मिल रही है। यहां सारे मकानों में लकड़ी का प्रयोग ज्यादा होता है। जम्मू में तो देवदार का एक स्लीपर छह हजार का बिकता है। यहां तो वैसे ही मिल जाती है। यह एक देवदार का पेड़ लाख रु. से ज्यादा का है। यहां तो ऐसे लाखों पेड़ खड़े हैं। अकूत सम्पत्ति है यहां भी।

नाग देवता मंदिर बस स्टैण्ड से तीन किमी है। थोड़ा घाटी में उतरकर निर्जन स्थान पर। सिर्फ लकड़ी का बना शायद पांच–छह सौ वर्ष पुराना। मंदिर के आसपास दो–तीन ढाबे तथा आवास योग्य कमरों का निर्माण हो चुका है। मंदिर के अंदर एक बार में चार व्यक्ति ही घुस सकते हैं। मंदिर का गुम्बद चौकोर है जिस पर झंडा लगा हुआ है। मंदिर के अंदर महिलाओं के प्रवेश पर पाबंदी है। मंदिर में देवी देवताओं की लकड़ी की मूर्तियां हैं। एक मूर्ती पर सिंदूर लगा हुआ है। नाग देवता भी बनाये गये हैं। एक आले में कोई प्रतीक चिन्ह रखा है जिसके सामने दीपक जल रहा है। अगरबत्तियां एवं धूपदान भी हो रहा है। मंदिर के बाहर चावल की फूली तथा चीनी के मखानों का बिक रहा प्रसाद खरीद कर हमने भी चढ़ाया। स्थानीय निवासी चार मोटी चुपड़ी हुई रोटियां भोग लगाने के लिये लाते हैं फिर उन्हीं को प्रसादरूप में ग्रहण करते हैं। सुदर्शन ने एक श्रद्धालु से पूछ ही लिया। उसने बताया कि सामने के ढाबे में अपना आटा सामान देकर रोटियां बनवाते हैं। हम यहां की परंपरा से अनभिज्ञ हैं। जैसा हमारे समझ में आया हमने पूजा अर्चना की। देव पूजन में साधन की अपेक्षा श्रद्धा का ज्यादा महत्व है। जैसा कि भगवान ने गीता में स्वयं कहा है, 'मुझे किसी भी रूप में भजने वाले भक्त समानरूप से प्रिय हैं।' वैसे हमारे राजस्थान में भी देवताओं के मंदिरों पर जाकर रसोई बनाने व सवामणी चढ़ाने जैसी इससे मिलती जुलती परंपराऐं मौजूद है।

जम्मू कश्मीर में मंदिरों की पवित्रता का विशेष ध्यान रखा जाता है। चमड़े के सामान, जूते–चप्पल के साथ मौजे भी ले जाने की मनाही है। मंदिरों एवं मूर्तियों के फोटो नहीं लेने दिये जाते। यहां तो महिलाओं के प्रवेश पर ही पाबंदी है। बाहर से पूर्ण देव दर्शन संभव नहीं है। हमने प्रसाद ग्रहण करने के बाद घोड़ेवालों से मंदिर को देखते हुये फोटो खिंचवाये। थोड़ी ही देर में हम वापस घोड़ों पर सवार हो गये। अब धुंध कुछ छंटने लगी है। घाटियों के नयनाभिराम दृश्य नैत्रों को तृप्त कर रहे हैं। यहां मौसम बहुत तेजी से बदल रहा है। कभी धूप और कभी अंधकार। बादलों के टुकड़े तेज गति से उड़ते दिखाई दे रहे हैं। घोड़ेवाले हमें दूसरे रास्ते से वापस लाये। रास्ते में जगह–जगह खूबसूरत होटल बने हैं। घोड़ेवाले पूरे रास्ते गाइड का काम करते रहे। कच्ची–पक्की सड़कें पार करने के बाद हम एक पार्क में घोड़ों से उतरे। पार्क में टी.डी.सी. ने बहुत सारे मनोरंजन के साधन लगा रखे हैं। पेड़ के तनों से बनी बिल्कुल प्राकृतिक मेज कुर्सियां पहली बार ही देखी। झूले, चक्कर, रपटपट्टी, बेलेंसपट्टी, फूलों की क्यारियां, और न जाने क्या–क्या? यहां हम पौन घंटा रुके। झूले, बैठे, लेटे और फोटो खींचें। यहां फिल्मों की शूटिंग होती है। रोमांस तो नहीं आ सका, घोड़े वाले हमारे इंतजार में हमें देख रहे थे। दो–चार और लोग भी पार्क में थे। हम इसके बाद रेल्वे कर्मचारियों को छुट्टियां मनाने के लिये बनाये गये क्वाटर्स व मैदान में घूमे। वहां भी हमने कई फोटो लिये। एक हॉकर से कश्मीरी कच्चे

सेव लेकर खाये। वापसी में सरपट चाल से घोड़े दौड़ाने पर मुझे तो बहुत आनंद आया पर सुदर्शन ने घोड़ेवालों को घोड़े दौड़ाने से मना किया। बारह बजे हम जे.के.टी.डी.सी. के होटल के सामने घोड़ों से उतरे। घोड़ेवाले व्यवहारिक व अच्छे लोग निकले। उन्होंने इनाम इकरार तक नहीं मांगा और पैसे देने के बाद भी कहा,

''बाबूजी! लाओ आपका सामान हम होटल तक छोड़ आयें।''

हम सीधे होटल न आकर रास्ते में पार्क में ही बैठ गये। पत्नीटॉप की अधिकृत सैर तो पूरी हो चुकी है और हमने तो कल दोपहर में वापसी यात्रा तय कर रखी है। पूरे 24 घंटे अभी हमारे पास और हैं। पार्क की गीली घास पर बैठ हम बातें करने व ताश खेलने में समय गुजारने लगे। मौसम बहुत जल्दी–जल्दी बदल रहा है। कभी धूप, कभी छांह, कभी फुहारें। एक बारगी तो इतनी तेज धूप खिली कि हमें हमारे यहां की जून की दोपहर याद आ गई। बहुत देर बैठने के आद हमें भूख लग आई और हम सामान समेट होटल की ओर बढ़े। रास्ते में फोटोग्राफर हमारा कश्मीरी ड्रेस में फोटो खींचने के लिये तैयार खड़े थे। साबूजी ने पूछताछ की पर मैंने साफ मना कर दिया। अभी गत वर्ष की यात्रा में ही इन फोटोग्राफरों ने मेरे काफी चूना लगाया था। वापसी में हम बाग से हमारे होटल का रास्ता चूक गये। थोड़ी पूछताछ के बाद राजमार्ग पर आये। ताजा टमाटर व खीरा खरीदा। होटल वाला सलाद बहुत महंगा देता है। खाना होटल पर व सलाद अपने कमरे में चल कर खायेंगे। अपने पसंद के होटल पर मेरे तीनों साथियों ने चाय पी। इतनी देर मैं टमाटर भक्षता रहा। कमरे में पहुंचने से पहले हम ढाबेवाले को दो प्लेट पत्तागोभी की सब्जी बनाने का आदेश दे गये। कमरों में जा तरो–ताजा हो सलाद खा हम डेढ़ बजे ढाबे में आये। हमारी भूख दिनोंदिन कम होती जा रही है। हम बहुत कम खा पाये और कमरों में जाकर सो गये।

एक घंटा नींद निकालने व एक घंटा ताश खेलने के बाद चार बजे करीब हम सानासर रोड पर घूमने निकले। थोड़ा आगे ही सुरक्षाबलों द्धारा बनाये शिवमंदिर के दर्शन किये। घने कोहरे के बीच हम पुनः आगे बढ़े। मैदानी इलाके में बारिश–कोहरे से बचने के लिये पेड़ों के नीचे आश्रय लेते हैं इसके विपरीत यहां पानी के छींटों से बचने के लिये हमें पेड़ों से दूर–दूर चलना पड़ रहा है। यहां सर्वत्र पेड़ों के नीचे की जमीन गीली हो रही है तथा पेड़ों से दूर जमीन एकदम सूखी है। बिना प्रत्यक्ष देखे ऐसी स्थिति की कल्पना करना भी मुश्किल है। वास्तव में होता यह है कि ऊँचे पेड़ों के पत्तों से कोहरा टकराकर पानी का रूप ले लेता है और वह पानी हवा चलने पर लगातार मोटी–मोटी बूंदों के रूप में जमीन पर टपकता रहता है। पेड़ जितना ऊँचा पानी गिरने की क्रिया उतनी ही तेज। यहां के निवासियों को मौसम का पूरा ज्ञान है। प्रातः हम रैनकोट लेकर गये थे पर घोड़ेवालों ने तुरंत ही कह दिया था,

''चिंता न करो, धुंध हो रही है इसलिये आज बरसात नहीं आयेगी।''

और ऐसा ही हुआ भी। इस सनासर रोड पर बायीं ओर गहरी खाई है जिसमें सघन देवदार (चिनार) के वृक्ष लगे हैं। करीब आध किमी आगे जाने पर हमें मृत जानवर की बहुत तेज दुर्गंध आई। महिलाओं को चक्कर से आने लगे और जी मिचलाने लगा। मेरी आगे बढ़ने की अच्छा थी लेकिन तीनों की इच्छा पर वापस लौट पड़े।

''ऐसा क्या गार्डन देखना जो बीमार ही हो जावें?'' सुदर्शन ने जरा जोर देकर कहा। नतीजतन सानासर रोड के गार्डन की सैर करने का विचार हमें छोड़ना पड़ा। इस रोड पर पूरे समय में हमें मात्र एक टैक्सी सानासर की तरफ से पत्नीटॉप की ओर आती मिली। इस बदबू से मेरे को तो कुछ नहीं हुआ पर मेरी पत्नी को सिरदर्द हो गया। रेणु भाभीजी को तो उल्टी तक हो गई जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने रात का खाना तक नहीं खाया।

कुछ देर और इधर–उधर घूमने के बाद हम हमारे होटल में आ गये। इतनी बढ़िया यात्रा में इस बदबू ने व्यवधान पैदा कर दिया। रास्ते में लोगों ने बताया कि वहां एक घोड़ा मरा पड़ा है। थोड़ा आगे और निकल जाते तो बदबू नहीं आती। कमरे में आ हमने जी मिचलाने के इलाज की तजबीज शुरु की। सुदर्शन के बैग में नीबूपानी बनाने का आवश्यक सामान नीबू, चीनी, नमक आदि रखा हुआ था। सभी ने एक–एक गिलास नीबूपानी पीया फिर काला नमक डालकर सलाद खाया। कुछ देर आराम करने के बाद वापस बाहर गये। पास ही के एस.टी.डी. बूथ से बारां सहित कई स्थानों पर बात की। कुछ नया खाना खाने के चक्कर में पास ही के एक बहुत बढ़िया होटल व भोजनालय पर मीनू देखने गये। वहां के मीनू में मांसाहारी नाम देखकर वापस आ गये। उसी कलवाले ढाबे में आलू–प्याज की एक प्लेट सब्जी के साथ थोड़ा सा खाना खाकर वापस होटल पहुंचे। आज हमारे होटल मालिक ने इशारा करने मात्र पर साबू को एक अतिरिक्त कम्बल लाकर दे दिया। साढ़े नौ बजे तक ताश खेल कर सोये।

तारीख 8–9–97 सोमवार

आज कोई काम नहीं है, आराम से उठे। प्रातः छः बजे खिड़की के बाहर झांकने पर खुले मौसम में दूर–दूर तक के पहाड़ों का खूबसूरत नजारा दिखाई दिया। आज मौसम खुल जायेगा पर सब किस्मत की बात है आज तो हमें जाना ही है। आठ बजे नहा–धो कमरा छोड़ बस स्टैण्ड पर आ गये। अभी वह चाय की दुकान नहीं खुली थी जहां की चाय साबू को पसंद थी। समय गुजारने के लिये हम सानासर रोड के ऊपर की पगडंडी पर बढ़ लिये। इधर यात्रियों को तंबुओं में ठहराने की व्यवस्था है। हमने यहां तख्त, तंबू एवं पानी की व्यवस्था देखी। कुछ–कुछ मौसम साफ होने पर हम पहाड़ों के दृश्य

देखने लग जाते। तंबुओं से कोई एक फर्लांग आगे भी कोई होटल दिखाई दे रहा है पर बदबू फिर आड़े आ गई और हम वापस लौट लिये।

शिव–मंदिर में आते समय दर्शन किये। चायवाला अभी भी नहीं आया तो हम नागमंदिर रोड पर बढ़ लिये। अब होटल में बैठने से तो यहां प्रकृति और बदलते मौसम का आनंद लेना ही कहीं ज्यादा अच्छा है। इस रोड पर दो तीन बढ़िया ढाबे दिखाई दिये। साबूजी ने अपनी स्टाइल में चाय दूध बनवाया और हम पीकर तृप्त हुये। यहां अभी से ही खाना भी तैयार हो गया था। सब्जियां भी कई तरह की थी। दो दिन से यह होटल हमारी नजरों से कैसे छुपे रहे? चाय पीने के बाद इसी सड़क पर और आगे बढ़े। आध किमि बाद एक हॉटल शायद स्टार युक्त, आया और सड़क समाप्त हो गई। हम वापस लौटे और गार्डन पार कर सरकूलर रोड़ पर आ गये। बहुत देर तक इस रोड पर खड़े हो सघन देवदार के वन तथा चमके–छुपते सूरज के बीच सामने दिखाई दे रहे नाथाटॉप तथा सानासर की चोटियों को देखने का आनंद लेते रहे। फिर एक पिकनिक स्पाट लॉन में एक पेड़ के नीचे बने छोटे से चबूतरे पर बैठ बातें करने लगे। एक घंटा गुजारने के बाद हम बटोत रोड पर आगे बढ़े। एक मोड़ उतरने के बाद हमने फोटोग्राफी की और टहलते हुये कुद रोड़ पर आ गये। इस तरह सुबह आठ बजे से साढ़े ग्यारह बजे तक का समय हमने विभिन्न कोणों से यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य निहारते हुये गुजारा। भोजन करने की किसी की इच्छा नहीं थी। सामान समेट उसी संजय नाम के कुली को लदवा बस स्टैण्ड आ गये। ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा और सीधे जम्मू जाने वाली एक्सप्रेस बस आ गई। बस आने पर कुली व बस कंडक्टर ने मिलकर सारे सामान छत पर बांधे। सौभाग्य से हमें सीटें भी मिल गई और हमने इस स्वर्ग को विदा कहा।

कुद के आगे के एक गांव के होटल में करीब एक बजे बस वालों ने खाना खाया पर हम हमारे पास बंधा नाश्ता कर चुके थे अतः हमने सिर्फ लिम्का ही पी। इसके बाद लगातार सफर कर हम साढ़े तीन बजे जम्मू पहुंचे। बीस रु. में एक कुली के सिर सामान लाद हम हरिओम् भवन रघुनाथ मंदिर गये। वहां कोई कमरा खाली न मिलने पर हम होटल देखने गये। मैंने दो मंजिल पर एक होटल पसंद किया और हम उसी कुली से सामान लदवाकर वहां पहुंच गये। सुदर्शन को वहां की व्यवस्था पसंद नहीं आई और हम पुनः सामान उठवाकर सुदर्शन के पसंद के होटल में गये। हमारे कमरे बुक होने से पहले ही उसमें बड़ी पार्टी आ गई और हमें चौथी बार कुली के सिर पर सामान रखवाकर एक अन्य रघुनाथ होटल में आना पड़ा। यहां हमें 150 रु. प्रति कमरे में अपेक्षाकृत महंगे कमरे लेने पड़े, कुली को भी बहुत झंझट के बाद पचास रु. में संतुष्ट कर पाये। इस कवायद में हमारा डेढ़ घंटा खर्च हो गया तथा हम सब पसीने से तरबतर हो गये। यहां जम्मू में गर्मी है, फिर हम तो वैसे ही अभी ठंडी जगह से आ रहे

हैं। साबू ने होटल में घुसते ही तीन चाय मंगवाई और मैं बाजार सामान खरीदने गया तो एक ठंडी लस्सी पी आया। पसीने में लस्सी पीना घातक रहा और मेरी तबियत खराब सी हो गयी। मेरे बाजार से आने तक दोनों महिलाओं ने तीन दिन के कपड़े धो डाले। कपड़े सुखाने के लिये हमने होटल में रस्सी बांधी। हमारे इन क्रियाकलापों से होटलवाला नाराज हुआ। मजबूरन हमें कपड़े अंदर कमरों में रस्सी बांधकर सुखाने पड़े। इसके बाद हमने स्नान किया। सारे कामों में हमें सात बज गये।

हम जम्मू में घूमने के लिये रुके हैं। इससे पूर्व मैं दो बार जम्मू आया था पर केवल रघुनाथ मंदिर दर्शन करके ही चला गया था। हमने होटलवालों से घूमने के स्थान तथा साधनों एवं भोजन के लिये ढाबे की जानकारी ली। इसके अतिरिक्त कल हमने पठानकोट जाना तय किया है। वहां से हम चारों माताओं– चामुंडा देवी, कांगड़ा देवी, ज्वालादेवी व चिन्तपूर्णी देवी के दर्शन करने जायेंगें। होटलवाले की मंशा सब यात्राओं का ठेका लेने की है पर हमने उससे जानकारी ही ली, पक्का कुछ भी नहीं किया। पास की एक ट्रेवलिंग एजेन्सी पर भी मैं रेट्स तलाश करके आया। जम्मू से चार देवियों की यात्रा कराकर वापस लाने के लिये पैकेज ट्यूर बसें भी चलती हैं पर ऑफ सीजन के कारण वे अभी बंद हैं। सात बजे सायं होटल से निकल सर्वप्रथम हमने रघुनाथ मंदिर के दर्शन किये। हमें आरती में शामिल होने का भी सौभाग्य मिला। इसके बाद हमने भोजन के लिये ढाबा ढूंढा। हमारे होटलवाले द्वारा बताये दोनों ढाबे बहुत दूर निकले व हमें पसंद भी नहीं आये। हमारे होटलवाले की विश्वसनीयता हमारे मन से समाप्त हो गई। एक ठीक से दिखने वाले ढाबे में भोजन कर हम बिलो गुम्मट रोड पर चले गये। इसी रोड पर स्थित संगम होटल में मैं 1994 की अमरनाथ यात्रा से वापस आने के बाद रुका था। आज मैं उन रास्तों को या उस होटल को नहीं ढूंढ पाया। रास्ते में कुछ खरीददारी भी की गई, ऑटोवालों से कल घुमाने के बारे में भी पूछताछ की। हमारे होटल के समीप के ट्रेवल ऐजेंसीवाले ने मुझे आवाज देकर बुलवा लिया और बहुत देर तक मेरा भेजा खाता रहा। मुझे वह आदमी कुछ सनकी लगा। पिंड छुड़ाने के लिये मैंने साबू को भी बुलवा लिया। हम दोनों ने मिलकर पूरी जानकारी व किराये की दरें लेकर उससे सुबह मिलने का आश्वासन दे पिंड छुड़ाया।

होटल आकर हमने सुबह का कार्यक्रम बनाया और साढ़े नौ बजे सो गये।

तारीख 9–9–1997 मंगलवार

प्रातः जल्दी उठ नित्यकर्मों से निवृत्त हो हमने होटल के कमरे खालीकर सारा सामान इसी होटल के क्लॉकरुम में रख दिया। प्रेस के कपड़े पास ही की थड़ी पर दे आये तथा उससे दोपहर एक बजे तक कपड़े तैयार करने के लिये कह दिया। इसी समय यहां एक टैक्सी ड्राइवर आया और उसने चारों देवियों के दर्शन करवाकर अमृतसर छोड़ने के 3000 रु. मांगे। हमने उसे 2500 रु. लगाये तथा

दोपहर दो बजे आने के लिये कहा। वह राजी नहीं हुआ तथा हम घूमने निकल गये। हमारे पास कैमरा तथा बैगों में थोड़ा सा आवश्यक सामान ही था। सबसे पहले हमने रघुनाथ मंदिर जा तसल्ली से पूरे मंदिर में दर्शन किये। यहां ट्रस्ट बना हुआ है पर पंडे–पुजारियों की लूट जारी है। हर भगवान के पास एक पंडा थाली में सौ तक के नोट सामने फैलाकर बैठा रहता है तथा वह दानपेटी की अपेक्षा थाली में पैसे डालने के लिये प्रेरित करता है। पूरे दर्शनों के दौरान हम पंडों की लालची प्रवृत्ति पर टीका–टिप्पणी करते रहे। यह मंदिर आतंकवादियों की हिट लिस्ट में है, यहां चाक–चौबंद सुरक्षा व्यवस्था की गई है। हमें मेटलडिक्टेटर में से गुजारा गया तथा जामा तलाशी भी ली गई। मंदिर में फोटो खींचना सख्त मना है। हमारे जूते–मौजे, बैग तथा कैमरा द्वार पर ही रखवा लिया गया। इसकी यहां मुफ्त व्यवस्था है। इस मंदिर के प्रमुख ट्रस्टी महाराजा श्री कर्णसिंह जी हैं। यह मंदिर राज परिवार द्वारा ही बनवाया गया है। यहां महाराजा हरिसिंहजी तथा गुलाबसिंहजी की आदमकद प्रतिमायें भी स्थापित हैं। यहां के शिव मंदिर में स्फटिक का शिवलिंग स्थापित है जिसके बीच में आश्चर्यजनक रुप से जलता हुआ दीपक तथा नाग दिखाई देता है। हम सोचते रहे कि ये बीच में है या पीछे। यह मंदिर स्वर्ण कलशों से आच्छादित है तथा यहां अनेकों गुम्बद हैं। यह ट्रस्ट यहां धर्मशाला, गौशाला, प्याऊ आदि भी संचालित कर रहा है। मंदिर के पीछे धर्मशाला निर्माण का कार्य अभी भी चल रहा है।

मंदिर दर्शनोपरांत हम पेटपूजा हेतु पास ही की अमृतसरियां दी हट्टी नामक मिठाई की दुकान पर पहली मंजिल पर जा बैठे। तीन प्लेट पूरी साग, रसगुल्ला, हलुआ आदि खाकर तृप्त हुये। बाहर आ, जम्मू घुमाने के लिये एक सौ पेंतीस रु. में एक ऑटो कर चारों उसी में बैठ गये। ऑटोरिक्शावाला भला आदमी लगा। पहले हम जामवंत गुफा या पीर खोह गुफा जो तवी नदी के किनारे स्थित है; गये। यहां बहुत बड़ी प्राकृतिक गुफा को आधुनिक निर्माण द्वारा सही करके माताजी व शिवजी का मंदिर बनाया गया है। गुफा के अंदर गर्मी व घुटन सी महसूस हुई क्योंकि यहां अगरबत्ती व दीपक जल रहे थे पर हवा आने के लिये कोई खिड़की नहीं है। बाहर लाल मुंह के बड़े बड़े बंदर घूम रहे थे। मैं सहजरुप से एक बंदर के पास से गुजरा तो वहां मौजूद साधु ने टोका,

''दूर रहो काट लेगा।''

यहां भी हमने बाहर से फोटो लिया और अपने रिक्शे में बैठ अगले मुकाम अमर पैलेस महल पहुंचे। यह भी तवी नदी के किनारे बना हुआ है। खूबसूरत महल में पांच रु. का टिकट लेकर प्रवेश किया तथा यहां के राजा महाराजाओं के फोटो तथा उनके प्रयोग में आई वस्तुओं का संग्रह देखा। डाक टिकटों का बना अशोक स्तम्भ, फ्रेम में जड़ी तस्वीरें, मेवाड़ के राजाओं तथा डोगरा शासकों की वंशावली देखना भी अच्छा लगा। इससे लगा बाग तथा वहां से दिखाई देता तवी नदी का पाट फोटोग्राफी के

लिये ललचाता है। फोटो खींचने की मनाही के चलते यहां के गार्ड ने एक यात्री के कैमरे से रील निकालकर खराब कर दी। हमें इस महल में इतनी ज्यादा रुचि भी नहीं थी। हमारे राजस्थान में इससे कई गुना बढ़े और खूबसूरत महल हम देख चुके हैं। याददाश्त के लिये हमने बाहर आ महल को देखते हुये दो फोटो लिये।

अगला पड़ाव रणबीरेश्वर मंदिर पहुंचने से पूर्व हमने रास्ते से अमरूद खरीदकर खाये। यह राज परिवार का शिव मंदिर विशाल प्रांगण में एक मंजिल पर बना हुआ है। यह मंदिर यहां के व्यस्त बाजार में है। मंदिर के मुख्यद्धार पर जूता स्टैण्ड तथा वाटरकूलर लगी प्याऊ है। सामने के कमरों में हिन्दुओं के विभिन्न संगठनों के कार्यालय हैं। तल मंजिल में संतों एवं कर्मचारियों के निवास तथा धार्मिक पुस्तक विक्रय केन्द्र है। यहां मंदिर में विशाल शिवलिंग स्थापित है। यहां श्रद्धालुओं की अच्छी भीड़ है। हमने भी देवदर्शन व परिक्रमा की। यह मंदिर महाराजा श्री रणबीरेश्वरजी ने बनवाया था। महाराजा की प्रतिमा एक ऊँचे स्तम्भ पर अपने इष्ट देव भगवान शिव को हाथ जोड़कर नमन करते हुये स्थापित की गई है। यह मंदिर हमें बहुत अच्छा लगा। अंदर फोटो खींचने की मनाही होने के कारण सड़क से मंदिर के फोटो लिये।

एक लंबा रास्ता तथा तवी नदी का पुल पार कर हम जम्मू के पूर्वी भाग में पहुंचे। रिक्शेवाले ने हमें बाग–ए–बाहु में स्थित माता मंदिर का रास्ता बताया तथा यह निर्देश दिया कि वह बाग के मुख्य दरवाजे पर मिलेगा। रिक्शे से उतर गली बाजार पार करने के बाद हमें बच्चों का मनोरंजन पार्क दिखाई दिया। हमने तीन रु. प्रति व्यक्ति टिकट ले उसकी भी सैर कर ली। यहां बहुत सारे झूले चकरी लगे हैं पर इस भरी गर्मी में उनमें झूलना दुखद है। पूरे मनोरंजन पार्क में एक भी यात्री नहीं मिला। पार्क से निकल कर हम बाहुफोर्ट के मुख्य दरवाजे पर माताजी दर्शनार्थ जाने वाली कतार में लग गये। हमने अपने जूते चप्पल बाहर खुले में वैसे ही असुरक्षित रूप से उतार कर रख दिये। महिलाओं एवं पुरुषों की पृथक–पृथक पंक्ति बनाई गई है। आधे घंटे धूप में खड़े रहने में पसीने में नहा गये। आध घंटे बाद किले के दरवाजे तक पहुंच पाये। यहां चमड़े की बेल्ट, पर्स आदि सामान रखवाये जा रहे हैं। मेटल डिक्टेटर में से गुजारने के बाद जामा तलाशी भी ली गई। पुनः हम बहुत लम्बी सर्पाकार पंक्ति में खड़े हो गये। महिलायें अलग पंक्ति में लग रही थी। इंसानी भीड़ में ठुंसे धीरे–धीरे आगे बढ़ते मुझे तो चक्कर से आने लगे। कतार के बायीं ओर चौकोर आंगन में दस बारह बकरे बंधे थे जिनकी कई लोग पूजा कर रहे थे। यहां बकरे चढ़ाने की परंपरा है पर हमारे सामने कोई बकरा नहीं काटा गया और न ही हमें वहां ऐसे कोई चिन्ह दिखाई दिये। यह डोगरी शासकों की कुलदेवी का मंदिर है। पहले पशुबली

आम प्रथा थी पर अब इसमें कई जगह बदलाव आ गया है। कई स्थानों पर इस प्रथा को मात्र प्रतीकात्मक ही रहने दिया गया है।

कोई घंटाभर बाद बारी आने पर हमने माताजी के दर्शन कर प्रसाद ग्रहण किया। पास ही बने अन्य मंदिरों पर भी जाकर हमने मत्था टेका। पास ही लगे कूलर से ठंडा पानी पीने के बाद हमने बहुत शांति महसूस की। हमारे जूते–चप्पल तथा साबू की बेल्ट की हमें चिंता थी अतः हम जल्दी से बाहर आ गये। हमें हमारा सारा सामान सही–सलामत मिल गया। महिलायें कोई पंद्रह मिनट बाद लौटी। अब हमने बाग देखना प्रारम्भ किया। किले को कवर करते हुये फोटो खींचे। ज्यों–ज्यों बाग में आगे बढ़ते गये बाग की सुंदरता निखरती गई। इतना अच्छा बाग देख हम आश्चर्यचकित रह गये। दोपहर की धूप–गर्मी पूरे यौवन पर है तथा हमारे पास समय भी सीमित ही है। बाग की हरियाली व सुन्दरता का आनन्द लेते हुये हम नीचे उतरते चले गये और कुछ पूछताछ करते बाग के मुख्य दरवाजे से बाहर निकल गये। ऑटोरिक्शा वाला हमें पहचान स्वयं ही हमारे से आ मिला। उसने इंगित कर हमें पास ही स्थित नवदुर्गा मंदिर में दर्शनार्थ भेज दिया। माता मंदिर के विपरीत यहां मात्र इक्का–दुक्का दर्शक वे भी हमारे जैसे पर्यटक ही हैं। आधुनिक दुकान और प्राचीन श्रद्धा स्थल का फर्क यहां साफ नजर आया। इस मंदिर में दुर्गा के नौ स्वरूपों एवं भैरव बाबा की संगमरमर की आदमकद प्रतिमायें एक बड़े व सुसज्जित हॉल में स्थापित की गई हैं। जल्दी से दर्शन कर अगले मुकाम जाने के लिये हम ऑटो में आ बैठे।

हमने ऑटोवाले से आठ स्थान साढ़े चार घंटे में घूमने की बात की थी। प्रथम तीन स्थान तो हम डेढ घंटे में ही घूम लिये और दो घंटे काली माता दर्शन में लग गये। बाग और मंदिर में हमें ज्यादा समय नहीं लगा। ऑटो में बैठते ही ऑटावाले ने बताया कि आइसकोल्ड वाटर केनाल अभी बंद कर रखी है, वहां जाने से कोई फायदा नहीं है। हमें इस गाइड पर विश्वास हो गया था अतः हमने उसकी बात मान कर वहां जाने पर जोर नहीं दिया। अब अंतिम बचा स्थान कांच का मंदिर दो मिनट के सफर में ही आ गया। यह भी आधुनिक तीर्थ है तथा इस मंदिर में हो रहा सारा कांच का काम मूलतः राजस्थानी कला है। इस तरह का काम हमारे गांवों कस्बों में कई मंदिरों में हो रहा है अतः हमें कुछ नया नहीं लगा। हमने इस मंदिर के फर्श पर बैठ पंद्रह मिनट आराम किया। हम समय से पूर्व ही हमारी सूची की सारी जगह देख चुके हैं। एक बज कर तीस मिनट पर हम ऑटो से हमारे रघुनाथ होटल के पास उतरे। हमारी जम्मू सैर साढ़े चार की जगह चार घंटे में ही सम्पन्न हो गई।

कुछ न कुछ खाते रहने के बावजूद भूख लग ही आई। हम पास ही के एकदम आधुनिक भगवती भोजनालय में पहुंचे। केवल शाकाहारी भोजनालय ही है इस बात से संतुष्ट होने के बाद खाना

खाने बैठे। हम रात भी इस होटल की तरफ आये थे पर दीवार पर लिखे मीनू में वेजमटन पढ़कर वापस चले गये थे। आज हमने होटल मैनेजर से इस डिस के बारे में चर्चा की। वह स्वयं नहीं समझ पाया कि यह क्या है और क्यों लिखा गया है? यहां देशी घी का ही प्रयोग होता है, खाने में भी विविधता है। जो चीज मांगो गर्मागर्म हाजिर। हमने हल्का–फुल्का ही खाया। स्वाद लाजवाब था और कीमत भी। रास्ते में मेरे विरोध के बावजूद सुदर्शन ने दो किलो अखरोट खरीद ही लिये। दुकान तो सही थी पर मैं बोझा ढोने से डर रहा हूं। अभी हमें कई जगह घूमना है।

रघुनाथ होटल हम दो बजे पहुंचे। मैं धोबी से कपड़े लाया तब तक साबू ने लॉज खाली कर दिया। टैक्सीवाला आया नहीं, अब हमें पठानकोट तक बस से जाना है। कुली हॉटल के बाहर ही खड़ा था, पंद्रह रु. में सामान उठवाकर बस स्टैण्ड पहुंचे। आगे की सीटें लेने के लिये हमें एक बस छोड़नी पड़ी। आध घंटा इंतजार में चप्पलों की मरम्मत, जूतों का पालिश तथा पानी की व्यवस्था हो गई। बस रोड़ पर खड़ी थी इसलिये हमें सामान ढोना पड़ा। भारी गर्मी में धूप में खड़ी बस, हम बस में बैठे सिकते रहे। बस में क्षमता से ज्यादा यात्री बिठाये गये। पूरे रास्ते हमें गर्मी से मुक्ति नहीं मिल पाई। एक कस्बे में चाय हेतु बस को बीस मिनट रोका गया। आगे मिलेट्री वालों ने बस को सड़क से अलग ले जाकर रोका एवं पूरी बस सामानों सहित खाली करवाकर गहन तलाशी ली गई। सामान भी खोल–खोल कर दिखाने पड़े। पूरी यात्रा में यह हमारा पहला अनुभव था, हमें बड़ा बुरा लगा। शाम 6 बजे लस्त–पस्त से पठानकोट बस अड्डे पर उतरे। पूछताछ की। आगे माता दर्शनार्थ जाने हेतु अभी कोई बस नहीं है। प्रातः सात बजे ही बसें मिल पायेंगी। गर्मी पसीने से परेशान हम लोगों ने ज्यादा पूछताछ नहीं की और पास ही के पराग होटल में 250 रु. की दर से दो कमरे ले, सामान जमा, पसीना सुखाने लगे। हमारे सारे शरीर तथा कपड़ों से पसीने की बू आ रही थी।

होटल में आते ही पत्नी ने बहुत सारे कपड़े धोने के लिये डाल दिये। सुखाने की समस्या के कारण मेरे थोड़ा सा विरोध करने पर वह नाराज सी हो गई। सारे कपड़े धो डाले गये। मेज, कुर्सी, सोफा, किवाड़ आदि सभी जगह कपड़े सुखा देने के बाद भी जगह कम पड़ी तो हमने जुगाड़ लगा कमरे में ही एक रस्सी बांध उस पर कपड़े डाले। इसके बाद हमने स्नान किया। साबू व मैं सात बजे करीब होटल से नीचे उतरे। होटल मैनेजर से चार दैवी दर्शन के बारे में जानकारी ली। उसकी टैक्सी अभी बाहर गई थी अतः उसने बाद में बताने के लिये कहा। इसके बाद हम बस स्टैण्ड के पास ही स्थित टैक्सी–स्टैण्ड गये। हमें पठानकोठ से चलकर वापस पठानकोठ या अमृतसर पहुंचना है। पठानकोठ के 1300 रु. एवं अमृतसर पहुंचाने के 2000 रु. टैक्सी की दरें हैं। बसों पर भी पूछताछ की पर बस से जाना हमें नहीं जमा। एक ट्रेवल एजेन्ट के मार्फत आखिर हमने सौदेबाजी कर 1150 रु. में

टैक्सी कर ली। दो सौ रु. एडवांस देकर रसीद ली। हमें कल प्रातः 6 बजे यात्रा शुरु करनी है तथा चार देवियों के दर्शन कर वापस 6 बजे पठानकोट पहुंच कर अमृतसर की बस पकड़नी है। होटल पहुंच यह खुशखबरी पत्नियों को सुनाई। आज के कठिन सफर से परेशान महिलायें टैक्सी करने पर ज्यादा जोर दे रही थी।

वापसी में खाने का केवल शाकाहारी भोजनालय देख आये थे। हमारे इस पराग होटल के नीचे के रेस्टोरेन्ट में तो सभी तरह का खाना था। रास्ते में महिलाओं की बातों से मालूम पड़ा कि मिसेज साबू ने भी सारे कपड़े धोकर हमारी ही तरह सुखा दिये हैं। यहां मौसम बहुत गर्म है और अधिकांश कपड़े तो सूख भी गये हैं। खैर हम पैदल चल पास ही के शर्मा भोजनालय में पहुंचे। ट्रेवलिंग एजेन्सी भी इन्हीं की है। इस ढाबे के संस्थापक पहलवानजी कोई अखाड़े के खलीफा रहे हैं। उनके कई फोटो तथा स्मृति चिन्ह यहां होटल में प्रदर्शित हैं। भोजन के बाद हमने पुनः टैक्सी के बारे में बात की व कल सुबह साढ़े चार बजे टैक्सी हमारे होटल के दरवाजे पर पहुंच जाने का आश्वासन लिया। भोजन के बाद हमने टेलीफोन बूथ से बारां एवं अमृतसर बात की। साबूजी ने उनके अमृतसर वाले फूफाजी को हमारा कार्यक्रम बताया। थोड़ा समय गुजारने के लिये हमने फुटपाथ पर मौसम्मी का रस पीया एवं भुट्टे सिकवाकर खाये। प्रातः चार बजे उठना है अतः जल्दी ही कमरों में जाकर सो गये।

यह होटल हमारे अपने स्तर से ऊँचे स्तर का है। इस होटल का पूरा भोजनालय तथा अधिकांश कमरे वातानूकूलित हैं। हमने ए. सी. कमरे नहीं लिये हैं पर हमारे कमरों में कूलर व पंखे लगे हुये हैं। बहुत बड़ा स्नानागार है। इसमें पश्चिमी सभ्यता के शौचालय बने हुये हैं जो हमारे लिये असुविधाजनक हैं। नलों एवं फव्वारों में गर्म तथा ठंडा दोनों तरह का पानी आता है। बाहर हवा फेंकने वाला पंखा, श्वेत–श्याम टीवी, सोफा सेट, डबलबैड पर डनलप के गद्दे तथा उन पर बिछे एकदम साफ चादर, फर्श पर कालीन, बड़े कांच वाली ड्रेसिंग टेबल, एक बड़ी अलमारी, फोन तथा घंटी देते ही वेटर हाजिर। दरवाजों में दो तरह के किवाड़–एक पूर्णतया बंद दूसरे मच्छर जाली युक्त। सुरक्षा के लिये दोनों में अंदर से लगाने की चिटकनी। किवाड़ों के पीछे कपड़े टांगने के लिये खूंटियां तथा दरवाजों खिड़कियों पर लगे नये चमकदार परदे। और इन सबके साथ प्रातः 6 बजे तथा आठ बजे प्रत्येक मेहमान को चाय। ऐसे सुविधायुक्त होटल के नर्म–नर्म बिस्तरों पर भी मुझे रातभर नींद नहीं आई। मैंने दोनों तरफ सिर रखकर देख लिया, मुझे लगता रहा कि पैर ऊँचाई पर हैं तथा सिर नीचे। नींद सुविधाओं की मोहताज नहीं है। शायद सुख सुविधा बढ़ने के साथ नींद और घटती चली जाती है। मैंने करवटें बदलते हुये ही रात काटी। पत्नी गहरी नींद के बाद प्रातः साढ़े तीन बजे ही उठ गई। मैंने भी कुछ देर बाद बिस्तर छोड़ा ही। साबूजी को जगाने के लिये उनके कमरे की घंटी बजाई पर वे तो

हमारे पहले ही उठ तैयार होने लगे हैं। पौने पाँच बजे सामान पैक करने के बाद साबूजी होटल के बाहर गये तो पता लगा वहां हमारी टैक्सी खड़ी थी तथा ड्राइवर आधा घंटे से इंतजार कर रहा था। परस्पर एक दूसरे के इंतजार में हमारा आधा घंटा खराब हुआ। ड्राइवर ने स्पष्टीकरण दिया कि उसने तो होटल के वाचमैन को आने की सूचना दे दी थी। हमने होटल खाली कर यात्रा पर रवाना होने में देर नहीं लगाई।

तारीख 10– 9– 1997 बुधवार

कल हमारा व्यस्त दिन रहा था और आज हम उससे भी तेज चलने वाले हैं। टैक्सी ड्राइवर भला लगा। पठानकोट में स्वयं के घर सूचना देने गया और दस मिनट में वापस आ गया। यहां बह रही नदी के किनारे बहुत सारे लोग घूम रहे हैं शायद यहां प्रातः भ्रमण का चस्का ज्यादा ही है। रास्ते में गाड़ी में पैट्रोल भरवाने हेतु हमें तीन पंपों पर घूमना पड़ा। इसके बाद गाड़ी ग्रांट रोड पर बढ़ गई। भजन की कैसट सुनते हुये मुझे तो झपकी लग गई। ऊबड़–खाबड़ सड़क के दचकों से आंख खुली तो पहाड़ी भूमी एवं हरियाली दिखाई दी। हाई–वे छोड़ हम चिन्तपूर्णी माताजी के रोड़ पर आ गये हैं। पंजाब प्रांत पीछे छूट गया है और हम हिमाचल प्रदेश में यात्रा कर रहे हैं। घुमावदार चढ़ाईवाली पहाड़ी सड़कों पर बढ़ते हुये हम प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेते रहे। यहां रोड के माइल–स्टोन्स पर जगह–जगह समुद्र से सड़क की ऊँचाई भी लिखी हुई है। हम 700 मीटर से चढ़कर 950 मीटर तक पहुंच गये। साढ़े आठ बजे चिन्तपूर्णी नामक छोटा कस्बा आया। मंदिर मार्ग पर दर्शनार्थियों की बहुत सी कारें जीपें खड़ी हुई हैं। गाड़ी खड़ी होते ही हम मंदिर की ओर बढ़े। एक थड़ी दुकान से हमने प्रसाद खरीदा। घुमावदार संकरे बाजार को पार कर बहुत सारी सीढ़ियां चढ़कर हम मंदिर पहुंचे। मंदिर गांव की सबसे ऊँची जगह पर बना हुआ है। मंदिर के सामने बने एक सरकारी भवन के अहाते में हमने अपने जूते–चप्पल उतारे एवं मंदिर में प्रवेश किया।

चिन्तपूर्णी मंदिर में देवी मां के चरणों की पूजा होती है। यहां कोई मूर्ती नहीं है। मुख्य गर्भगृह छोटा सा व छतरीनुमा ही हैं। यहां चमकदार वस्त्रों एवं फूलों से सजावट की गई है। यहां बैठे दो पुजारी भक्तों से पूजा सामग्री ले रहे हैं। पूजन के बाद हमने परिक्रमा की। पास ही स्थित भैरव बाबा के दर्शन किये एवं दूसरे गेट से बाहर निकल गये। वापस मंदिर के मुख्य द्वार पर आकर हमने चौकीदार से इजाजत ले बाहर से फोटो लिया। अंदर फोटोग्राफी मना है। हम जीप पर पौने नौ बजे आ गये पर अति आवश्यक कार्य से निबटने में आधा घंटा और गुजरा। इसके बाद हमने चाय बनवाई और मैं पांच रु. का हलुआ लेकर खाने लगा। एक साधु मुझ से वही दोना हलुवे का मांगने लगा।

मैंने कहा, '' बाबा यह तो मैंने झूठा कर लिया है।''

साधु बोला, '' बेटा प्रसाद झूठा नहीं होता है, हम तो खा लेगें।''

इस पर भी मेरी आत्मा ने उसे झूठा हलुवा देने की इजाजत नहीं दी और मैंने साधु को एक रुपया दे पिंड छुड़ाया। यहां चाय के साथ साथियों ने गुमटी के अंदर बैठ हमारे बैगों में रखा नाश्ता ग्रहण किया। पेटपूजा कर साढ़े नौ बजे हम ज्वालादेवी के लिये रवाना हुये।

चिन्तपूर्णी में पीछे की तरफ से घुसे थे। दूसरी ओर से बाहर निकले तो चौड़ी सड़क, धर्मशालायें, होटल तथा अच्छे बने पक्के मकान दिखाई दिये। इधर से देखने पर हमें चिन्तपूर्णी ठीक कस्बा लगा जहां रात रुकने की जगह भी है। थोड़ा आगे बढ़ते ही हमारी गाड़ी 7 फुट की संकरी सड़क पर मुड़ गई। सारे रास्ते छोटी–छोटी पहाड़ियां है तथा अच्छी हरियाली पसरी है। दस बजे एकाएक हल्की बारिश शुरु हो गई। ज्वालादेवी में ठीक बरसात हो चुकी है। प्रशासन ने मंदिर से कोई एक किमी दूर मुख्य सड़क पर गाड़ी खड़ी करवा दी। हम आवश्यक सामान निकाल बरसते पानी में, कीचड़ भरी सड़क पर, पैदल चलते, मंदिर के मुख्य द्वार के सामने पहुंचे। सभी तीर्थों की तरह यहां भी इस पूरे बाजार में पूजन सामग्री की दुकानें तथा होटल हैं। द्वार के पास बने जूता स्टैण्ड पर जूते–चप्पल जमा करवाकर हमने टोकन प्राप्त किया। यहीं लगे वाटर कूलर में हाथ धोये एवं पानी पीया। सीढ़ियां शुरु होते ही आई दुकान से पूजन सामग्री की दो टोकरियां खरीदी। संगमरमर लगी सीढ़ियां चढ़ हमने मंदिर में प्रवेश किया। लगभग 3' गुना 4' गुना तीन फुट के गड्डे में एक हल्की सी लौ बिना तेल बाती के जल रही है। इसी को मां भगवती की लपलपाती जीभ मान कर पूजा जाता है। इसी गड्डे में मां भगवती का शीश भी स्थापित किया गया है। दो पुजारी यहां खड़े हो भक्तों से पूजन सामग्री ले प्रसाद दे रहे हैं। इस परिसर की परिक्रमा में ओर देवी देवताओं की मूर्तियां भी लगी हूई है। हम परिक्रमा कर निबटे तो साबूजी वापसी हेतु सीढ़ियां उतरने लगे। मुझे कुछ ओर देखने की जगह का भान हुआ तो मैंने साबूजी को आवाज देकर बुलाया।

''अभी हमारे पास बहुत समय है, आये हैं तो पूरे दर्शन करके ही चलेंगे। लोग ऊपर के मंदिर पर भी जा रहे हैं। आओ हम भी देखते हैं।''

साबू ने सहमति जताई और हम पूजा की छोटी डलिया हाथ में लिये ऊपर के मंदिर की ओर बढ़ गये।

आम यात्री को भान नहीं होता कि यहां दो सम्प्रदायों के तीर्थ चल रहे हैं। ऊँची–ऊँची दसेक सीढ़ियां चढ़ने के बाद बोर्ड दिखाई दिया– 'गोरखनाथ पीठ के बारे में ज्वालादेवी ट्रस्ट कार्यालय में किसी प्रकार की पूछताछ न करें।' थोड़ा आगे बढ़ने पर हमें ज्ञात हो गया कि यहां नागा साधुओं ने भी अड्डा जमाया हुआ है। ज्वालादेवी मंदिर के बाहर से भी गोरखनाथ पीठ में आने के लिये अलग रास्ता

बना हुआ है। आते समय मेरी निगाह वहां पड़ी थी एवं मैंने वहां जाने के लिये सोच भी रखा था। अब हमें अंदर से ही रास्ता मिल गया तो हम वहीं से घुस गये। यहां शिवमंदिर बने हुये हैं। आगे गोरक्षनाथ पीठ के मार्ग को दिखाती कई पट्टिकायें लगी हुई हैं। हम उनके निर्देशन में बढ़ते एक लंबी लाइन में लग गये। अब कितना ही समय लगे हमें यह जगह देखकर ही जाना है। थोड़ी देर बाद हम बहुत संकरे मार्ग से गुजरकर एक हॉल में पहुंचे। यहां पूरी दीवारों पर गोरखनाथ जी के चमत्कारों के चित्र टंगे हुये हैं। बीच में यज्ञ कुंड है जहां 'हाथ लगाना मना है' लिखा हुआ है। आगे लोहे के रेलिंग लगा कर पंक्ति को व्यवस्थित किया गया है। यहां परम्परागत पोशाक पहने हुये नागा साधु मुश्तैद खड़े हैं। यहां दीवारों पर ज्वालादेवी की कथा तथा महात्म्य जो दक्ष यज्ञ एवं सती कथा से जुड़ा है, भी लिखा हुआ है। कथा इस प्रकार है :–

सती के पिता दक्ष ने एक महायज्ञ किया जिसमें ईष्यावश अपने दामाद भगवान शिव को आमंत्रित नहीं किया। सती पिता प्रेम के वशीभूत बिन न्यौता पीहर यज्ञ में चली गई। वहां अपने पति का अनादर देख उसने यज्ञकुंड में कूदकर अपनी जान दे दी। शिव यह समावार सुन क्रोध में भरकर यज्ञस्थल पर आये और वहां भारी विनाश मचाया। इसके बाद सती के शव को कंधे पर लाद कर तांडव नृत्य करने लगे जिससे सारी सृष्टि दग्ध होने लगी। भगवान विष्णु ने शिव को सती के शरीर के मोह से मुक्त करने के लिये अपने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर के टुकड़े–टुकड़े कर दिये। धरती पर जहां सती के शरीर का हिस्सा गिरा वहीं शक्ति पीठ बन गया। इस तरह भारत भर में बावन शक्तिपीठ बने। वर्तमान भारत में बावन से ज्यादा स्थानों पर शक्तिपीठ हैं और हर शक्तिपीठ अपने असली होने का दावा करता हैं। शक्तिपीठ पर बली की परंपरा थी जो वर्तमान में कई जगह नारियल तोड़कर पूरी कर ली जाती है।

यहां गोरखपीठ की दीवारों पर बनी चित्र कथा के अनुसार ज्वालादेवी में सती की जिव्हा गिरी थी। नैनादेवी में आंखें, चिन्तपूर्णी में चरण, वैष्णवदेवी में सिर, काली माता कलकत्ता में कनिष्ठा अंगुली गिरी थी। अन्य कई स्थानों के भी विवरण है। सारी हमारी पौराणिक कथायें आस्थाओं पर ही जीवित हैं।

मेरी मान्यता है कि प्राकृतिकरूप से ज्वलनशील गैस निकलने वाला यह स्थान गुरु गोरखनाथजी को पसंद आया होगा। उन्होंने यहां तपस्या की फिर अपना आश्रम बनाया। तब से यह स्थान उनके शिष्यों नागा साधुओं के कब्जे में चला आ रहा है। यहां के प्राकृतिक चमत्कारों को गोरखनाथ जी का चमत्कार बताकर प्रचारित कर दुकान चलाई जा रही है। इस हॉल के रास्ते की पूर्वी ओर बनी खिड़की से हमें कोई बीस फुट नीचे स्थित माताजी के मंदिर का स्वर्ण जड़ित शिखर दिखाई दे रहा है। इस स्वर्ण पत्र पर कुराई का काम हो रहा है। जब से अमृतसर के स्वर्ण मंदिर पर सोने की

पत्तर चढ़ाई गई है हर जगह यह प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यहां ज्वालामाता मंदिर में थोड़ा सा स्वर्ण जड़ाई का काम बाकी है जो शायद एक दो साल में भक्तगण पूरा करवा देंगे।

कुछ समय बाद हमें गोरखपीठ में प्रवेश मिला। ज्वालादेवी प्रसाद के दोने हमने इस हेतु बाहर निर्धारित स्थान पर रख दिये। एक डेढ़ फुट चौड़े, चार फुट ऊँचे दरवाजे से अंदर घुसकर पाँच बड़ी–बड़ी सीढ़ियां सावधानी से नीचे उतरे। यहां कोई दो फुट व्यास का जल कुंड है। इस कुंडी का पानी उबलता सा नजर आता है। यहां खड़े नागा बाबा इसके पानी को हाथ में लेकर यात्रियों के छींटे मारते हैं एवं बताते हैं कि गुरु गोरखनाथजी की तपस्या के प्रभाव से यह पानी ठंडा हो गया है। यहां भी धरती से निकली गैस से एक ज्वाला जल रही है। दोनों स्थानों पर ढोक दे, कुछ दक्षिणा चढ़ा, श्रद्वालु वैसी ही ऊँची–ऊँची सीढ़ियां चढ़, वैसे ही संकरे दूसरे दरवाजे से बाहर निकल जाते हैं। आगे दालान में बैठे नागा बाबा लगातार माइक पर प्रचार कर गोरखनाथ पीठ में दान कर पुण्य लाभ कमाने का आग्रह कर रहे हैं। हमने भी दस रु. की रसीद कटा ढेरों आशीर्वाद लिया एवं अपने सामान उठा वापस जिस रास्ते गये उसी रास्ते से ज्वालामंदिर प्रांगण में आ गये। यहां आसपास कई देवीदेवताओं के मंदिर ओर बने हुये है। एक बड़े हॉल में मां के नौ स्वरूपों की आदमकद प्रतिमायें हैं। यहां सत्संग भवन तथा लघु पुस्तकालय भी है। दायीं ओर लंगर चल रहा है तथा ऊपरी मंजिल पर कमरे संभवतः संत निवास बने हुये हैं। यहां की यज्ञशाला में अभी यज्ञ चल रहा है तथा वहां काफी भीड़ है। इन सब के बीच चौक में एक चबूतरे पर ध्वज स्तम्भ है, जहां बहुत ऊँचा झंडा लहरा रहा है। इस ध्वज स्तम्भ के चबूतरे की परिक्रमा करने का महात्म्य है। यहां एक पंडितजी तिलक लगा कर दक्षिणा प्राप्त कर रहे थे। हमने पंडितजी से आज्ञा लेकर दो फोटो खींचे।

इस तरह हल्की बरसात के बीच गोरखपीठ एवं ज्वालादेवी मंदिर के पूर्ण दर्शन कर हम लौटे। रास्ते में पूजा बेचने वाले दुकानदार का हिसाब किया तथा स्टैण्ड से हमारे पदत्राण प्राप्त किये। टैक्सी तक पहुंचने के लंबे रास्ते में बरसाती पानी से हम पूरी तरह भीग गये तथा कीचड़ से हमारे कपड़े खराब हो गये। टैक्सी में बैठ हमने कांगड़ा के खूबसूरत मार्ग पर सफर शुरु किया। कांगड़ा जिला मुख्यालय है तथा इस जिले के अधिकांश कार्यालय धर्मशाला नामक शहर में हैं। यहां से एक मनाली जाने वाला रोड भी दिखाई दिया। यहां मीटरगेज की रेल की पटरी भी बिछी हुई है जो सड़क के समानानंतर कभी ऊपर कभी नीचे चल रही है। कई जगह सड़क एवं रेलमार्ग एक दूजे को काटते हैं। एक कच्ची सुरंग से भी हमारी टैक्सी गुजरी। साढ़े बारह बजे कांगड़ा पहुंच पार्किंग में गाड़ी खड़ी कर हम मंदिर दर्शनार्थ निकल पड़े। बहुत लंबा बाजार पार कर विशाल प्रांगण वाले मंदिर में पहुंचे। मुख्य द्वार पर एक दान पेटिका रखी हुई है तथा तिलकधारी मुंशीजी भी रसीद बुक लेकर बैठे हुये हैं।

मंदिर के मुख्य नृत्य पंडप में पचासों दर्शनार्थियों की भीड़ है। मंदिर की दीवारों पर उत्कीर्ण कथाओं में दक्ष यज्ञ की कथा भी है। गोरखपीठ आश्रम पर लिखी कथा से इसमें कुछ फर्क है। इस विशाल मंदिर का गुम्बद बहुत कलात्मक है। यह कांगड़ा के डोगरा शासकों की आराध्य कुलदेवी का मंदिर है।

कतार में हमारा क्रम आने पर हमने मंदिर में प्रवेश किया एवं दर्शन कर प्रसाद ग्रहण किया। प्रवेश के लिये सामने का विशाल बड़ा दरवाजा तथा निकास के लिये बगल का छोटा दरवाजा निर्धारित है। पीछे लंगर एवं भोजनालय है जहां बैठी महिला को हमने लंगर के नाम से दान कर रसीद ली। यहां भोजन जीमने की उत्तम व्यवस्था है पर हम आपस में भोजन करने पर सहमत नहीं हो सके। परिक्रमा के दौरान हमने यहां स्थापित अन्य देव प्रतिमाओं के भी दर्शन किये। यहां भैरव बाबा, शालिग्रामजी, शिवजी, बजरंगबली, कालीमाता आदि की प्रतिमायें स्थापित हैं। यहां कालीमाता प्रतिमा मंदिर में तीनों ओर दर्पण लगाये गये हैं जिससे एक ही मूर्ती कई बार दिखाई देती है। हमने यहां फोटो खींचे तथा कुछ देर चबूतरे पर बैठकर विश्राम किया। हम हमारे नियत समय से काफी जल्दी चल रहे हैं। अभी मात्र सवा ही बजा है और हम तीन माताजी के दर्शन कर चुके हैं।

जीप की ओर लौटते समय रास्ते में सिक रहे गर्मागर्म चने भूमड़े खरीदकर खाने लगे। कार पर आने के बाद ड्राइवर से खाना खाने के बारे में सलाह मांगी तो उसने चामुंडादेवी चल कर ही खाने के लिये कहा। भूख विशेष तो थी नहीं आगे के सफर पर रवाना हो गये। छोटी–छोटी पहाड़ियों के बीच से गुजरती संकरी सड़क। यह धर्मशाला जाने वाला रोड है। चामुण्डादेवी इस सड़क से थोड़ा हटकर एक छोटी नदी के किनारे बसा ठीक सा कस्बा है। यहां बहुत सारी धर्मशालायें तथा होटल हैं। मंदिर गांव के पार है। बीच में संकरा बाजार पार करके जाना पड़ा। यहां हमें बरसात मिली पर पैदल रास्ता ज्यादा न होने से समस्या नहीं हुई। यहां सिर्फ सौ मीटर ही पैदल चलना पड़ा और वह भी टाइल युक्त सड़क पर। मंदिर के मुख्य द्वार पर बने जूता स्टैण्ड में जूते–चप्पल छोड़ हमने मंदिर में प्रवेश किया।

चारों देवियों के मंदिरों में यह चामुंडा देवी का मंदिर सबसें ज्यादा भव्य लगा। यात्रियों के लिये यहां बहुत अच्छी सुविधायें भी हैं। यह मंदिर एक विशाल भवन के एक भाग के रूप में है। आगे के भाग में कार्यालय, लंगर तथा संत निवास हैं। बायीं ओर विशाल धर्मशाला बनी हुई है। दायीं ओर बनी विशाल झील में शेर, हाथी, नर्तकियां आदि की आदमकद पाषाण मूर्तियां स्थापित की गई है। बिजली की खास सजावट भी की गई है। पीछे की ओर नदी बहती है। श्रद्वालु नदी एवं झील या कुंड दोनों में ही स्नान कर सकते है। पीछे की ओर बड़ी–बड़ी प्राकृतिक गुफाओं में भी देव प्रतिमायें रखकर मंदिर बनाये गये हैं। पूरे परिसर में संगमरमर या कोटा स्टोन का ही फर्श है। यहां फोटो खींचना पूर्णतः वर्जित

है तथा चौकीदार कैमरों पर खास निगाह रखते हैं। कुल मिलाकर पूरा मंदिर आधुनिक कर दिया गया है।

मंदिर में कैमरा ले जाना मना है पर मैं अपनी जेब में रखकर कैमरा ले गया। दो बार माता मंदिर दर्शन एवं परिक्रमा के उपरांत हम नीचे की गुफा में शिव मंदिर के दर्शन करने गये। यह गुफा मुझे बहुत अच्छी लगी। यहां साबू ने खरीद कर बेलपत्र भी चढ़ाये। कुछ ऊपर प्लेटफार्म पर आ बरसते पानी में कुंड को देखते हुये एक फोटो चुपके से ले लिया। सदर दरवाजे से बाहर निकल वाचमैन की अनुमति से बाहर का एक फोटो और लिया। जूता स्टैण्ड से सामान उठा लौटते समय रास्ते में ढाबे दिखाई दिये। हम एक अच्छा सा ढाबा देखकर घुस गये। मैं कार चालक को बुलाने गया पर वह पूर्व में ही खाना खा चुका था। इस होटल पर बेकार व बहुत महंगा खाना मिला। खराब हो चुकी आलू की सब्जी जो हमने चखकर छोड़ दी थी के भी पैसे देने पड़े। वापसी में हल्के बरसते पानी में बाजार से लौटते समय भुट्टे खरीदे जो कार में बैठ कर खाये। यहां बाजार में विदेशी मार्का वाली विलासिता की कई बस्तुऐं बिक रही थी पर हमने ड्राइवर की सलाह पर कुछ खरीदना उचित नहीं समझा। साढ़े तीन बजे हम कार में बैठ वापसी यात्रा पर रवाना हो गये।

कार चालक ने वादे के मुताबिक हमें देवलोक नामक स्थान दिखाया। छोटे से गांव के किनारे किन्हीं संत ने यह विशाल आश्रम बनाया है। पूरे आश्रम में लगे कतारबद्ध वृक्ष मन को मोह लेते हैं। यहां विश्व की सबसे बड़ी हनुमानजी की प्रतिमा स्थापित की गई है जो बहुत दूर–दूर से दिखाई देती है। भगवान राम का विशाल मंदिर भी है। पूरे देवलोक आश्रम में हमें कोई इंसान नहीं मिला। हमें जल्दी है अतः यहां स्मृति हेतु एक फोटो ले वापस गाड़ी में बैठ गये। यहां से आगे बढ़ने पर हम धर्मशाला नामक नगर से मात्र चार किमी दूर से गुजरे। पहले ऐसा पता होता तो हम एक दिन धर्मशाला रुकने का भी कार्यक्रम बना सकते थे। सामने पहाड़ी पर पसरी हरियाली के बीच सफेदी के रूप में चमकता धर्मशाला नगर हमें अपनी ओर खींच रहा था पर हम समयाभाव के कारण नहीं जा सके। मन में थोड़ा मलाल रहा।

लगातार पांच किमी उतार के बाद एक गांव में डीजल पंप के पास टैक्सी रोकी गई। डीजल की गंध आते ही श्रीमती साबू तो गाड़ी में से उतर कर आगे चली गई। हम भी साथ गये। पानी पीया तथा फल खरीदे गये। बीस मिनट बाद वापस रवाना हो लगातार सवा घंटे तक उतारवाला रास्ता तय किया। चालक ने त्रिलोकी नामक गांव में एक छोटे से चाय के होटल के सामने गाड़ी रोकी। उतरते ही हमने लिम्का ली। फिर कुछ पैदल चल कर त्रिलोकीनाथजी के मंदिर में घुस गये। एक छोटे पहाड़ी झरने के तट पर एक बरामदा एवं दो छोटे कमरे बने हुये हैं। झरने में हाल ही होकर निपटी बरसात के

कारण मटमैला पानी बह रहा है। विशाल शिलाखंडों से टकराकर गर्जन के साथ उछलता–कूदता झरना मन मोह रहा है। हम बरामदा पार करके अंदर गुफा रूपी मंदिर में पहुंचे तो आश्चर्यचकित रह गये। अहा! यह तो साक्षात् त्रिलोकीनाथ द्धारा ही विरचित रचना है। कोई 15 फुट लंबी, दस फुट चौड़ी और पांच से सात फुट ऊँची गुफा जिसमें प्रवेश का एकमात्र रास्ता। इस गुफा में कुदरती कारीगरी है जिसे बनाना इंसान के बस की बात नहीं है। पत्थर के ही विभिन्न आकार के झाड़ फानूस सैंकड़ों की तादाद में छत से झूलते दिखाई देते हैं। अंधेरे में गुफा डरावनी लगती है। एक छोटा बिजली का बल्ब जलाकर उजाला किया गया है। पूरी गुफा में नमी है तथा कई स्थानों से पानी टपक रहा है। एक छोटी जलधारा गुफा के अंदर होकर बहती है। पानी द्वारा कच्चे पत्थरों में लाखों वर्षों तक कटाव करने के कारण ऐसी नायाब गुफायें बन पाती है। मैंने अपने जीवन में पहली बार ऐसा दृश्य देखा।

मंदिर दर्शन कर लौटे तो टैक्सी गायब थी। एकदम दिल को झटका लगा। हमारा तो सब कुछ उसी में था। होटल वाले ने बताया कि हवा भरवाने गया है तो थोड़ी राहत मिली। हमें बीस मिनट इंतजार करना पड़ा। चालक ने बताया कि पिंचर सुधरवाने में इतना समय लग गया। होटलवाले के आग्रह पर हमने उसकी दुकान से खरीद कर पेड़े खाये जो वाकई अच्छे थे। हम तुरंत रवाना हुये, अब हमारे पास समय की कमी हो गई है। पठानकोट बस स्टैण्ड पर सवा छः बजे उतर टैक्सी वाले को किराया दिया। पप्पू नाम का यह चालक खूंखार शक्ल के विपरीत अच्छा आदमी निकला। उसने हमें मनोवांछित जगह व समय पर छोड़ा और इनाम इकरार के लिये भी कोई जिद नहीं की। सही आदमी मिलना भी मां भगवती की कृपा से ही संभव है।

पठानकोट से अमृतसर के लिये अंतिम बस सायं साढ़े सात बजे जाती है। हम सवा छह बजे पहुंचे तथा मेटलडिक्टेटर वाले गेट से स्वयं ही सामान उठाकर बस अड्डे में घुसे। तुरंत ही पुलिस वालों ने हमारा स्वागत किया। जामा तलाशी ली गई फिर सूटकेस व बैग भी खोल कर दिखाने पड़े। यहां दो बसें खड़ी थी पर दोनों में सीटें खाली न होने के कारण हम नहीं बैठे। एक बेंच पर बैठ अगली खाली बस का इंतजार करने लगे। इस अवधि में हम टायलेट से निपटे, हाथमुंह धो कंघी कर तरोताजा हुये, पानी की केटलियां भरी। यहां इंतजार में बैठे हमारी एक बार पुनः पुलिस की दूसरी पार्टी ने पूरे सामान खोलकर तलाशी ली। हम थोड़े नाराज से हुये।

''क्या हमारी शक्ल इतनी खूंखार लगती है? अभी तो गेट पर चेकिंग करवाई ही है।''

'' क्या करें साहब हमारी ड्यूटी है।'' पुलिस वाले ने सूटकेस बंद करते हुये कुछ मल्हम लगाया।

''अभी हम पंजाब में हैं भाई और उस पर भी अमृतसर जा रहे हैं, देखते हैं आगे क्या–क्या होता है?'' मैंने जुमला कसा।

सात बजे अमृतसर जाने वाली बस लगी और मैंने आगे की सीटों के टिकट ले लिये क्योंकि मैं कतार में आगे ही आगे खड़ा था। कुली नहीं मिल सका अतः दोनों मित्रों ने मिलकर सारे सामान बस की छत पर चढ़ाये और चेन ताले से बांधे। यहां पुलिस के व्यवहार से हम कुछ डर गये। अब हम पंजाब में हैं और आतंकवादियों के बीच। बस एकदम खटारा है तथा यहां पठानकोट में भारी गर्मी व उमस महसूस हो रही है। यहां बसों में सिर्फ पीछे के दरवाजे से ही चढ़ने उतरने की अनुमति है। बस के आसपास भी पुलिस का पहरा है। मैं काफी देर नीचे खड़ा हो बस को खचाखच भरते देखता रहा। अंत में पीछे के दरवाजे से अपनी आगे की सीटों पर पहुंचना असुविधाजनक मान कर मैं आगे का गेट खोल कर बस में चढ़ गया। मुझे ऐसा करते देख वहां खड़ा पुलिस वाला मेरी ओर लपका। मेरा क्या हश्र होता, कह नहीं सकता गर मेरे को बस कंडक्टर ने बचा नहीं लिया होता। मैं बस कंडक्टर के पास बहुत देर से खड़ा इधर–उधर टहल रहा था तथा एक दो बार मैंने उससे बातचीत भी की थी। मैं अपराध बोध से सहमा सा अपनी सीट पर अपने साथियों के साथ बैठ गर्मी से उबलने लगा। बस चलने के बाद भी हमें आंशिक राहत ही मिली क्योंकि बस में सवारियां बहुत ज्यादा थी। बस लोकल थी और हर जगह सवारियां उतार–चढ़ा रही थी। यद्यपि मैंने बस कंडक्टर से हमारे सामानों का ध्यान रखने के लिये कह दिया था फिर भी मुझे पूरे रास्ते चिंता बनी रही। यहां पंजाब में आदमी का ही भरोसा नहीं ताले की क्या बिसात?

एक ठीक से कस्बे के बाजार में बस रोक कर कंडक्टर ने चाय पीने की छूट दे दी। हमने अपने सामान देखे, पेशाब से निपटे फिर अमृतसर साबू के फूफाजी को फोन लगाकर हमारी बस का नम्बर एवं अमृतसर पहुंचने का समय बताया। उधर से आश्वासन मिल गया कि बस पर हमें लेने दोनों पिता–पुत्र में से कोई पहुंच जायेगा। अमृतसर जैसी जगह पर रात साढ़े दस बजे उतरने का खौफ कुछ कम हुआ।

नौ बजे जब बस आगे बढ़ी तो यात्रियों का भार बहुत कुछ कम हो गया था इससे हमें काफी राहत मिली। हम बस में बैठे–बैठे भी सहयात्रियों से पंजाब के हालात तथा हमारे पास लिखे साबूजी के फूफाजी के पते पर पहुंचने के बारे में चर्चाऐं करते रहे। हम तो वैसे पूरा हिन्दुस्तान घूमे हुये हैं इतनी ज्यादा चिंता भी नहीं थी। सवा दस बजे ही अमृतसर आ गया। बस स्टैण्ड से पूर्व सड़क पर ही पूरी बस खाली हो गई। हमें भी सामान उतारने का आदेश हुआ। मैंने बस की छत पर जाकर सामान नीचे उतारे इतनी देर में हमारे मेजबान हमें लेने पहुंच गये। अब कोई चिंता नहीं रही। फूफाजी ने भावताव

कर उनके मकान पर पहुंचाने के लिये दो साइकिल रिक्शे आठ रु. प्रति रिक्शे में तय किये। पिता–पुत्र दोनों स्कूटर पर आगे चलते उन्हें रास्ता बताते गये। घर पहुंच हमने रिक्शेवालों को आठ रु. कम मान, दस–दस रु. देकर विदा किया। वह तो दूसरे दिन पता लगा कि यहां रिक्शे बहुत सस्ते हैं और दिन में तो इतनी दूर के पांच रु. ही लगते हैं। इस तरह हम अमृतसर जाकर भी वहां का बस आगार नहीं देख सके।

फूफाजी ने आधुनिक कालोनी में अच्छे से दो मंजिला मकान में ऊपर की मंजिल किराये पर ली हुई है। जिसकी भू–मंजिल पर मकान मालिक सरदारजी स्वयं रहते हैं। फूफाजी कुल तीन ही प्राणी हैं। हम बस में खूब सलाह करके आये थे कि बुआजी को खाना बनाने की तकलीफ नहीं देगें पर यहां का प्यार देखकर हम ना नहीं कह सके। इस चक्कर में हम पूरे रास्ते कुछ न कुछ खाते–पीते भी रहे थे। बुआजी ने रात के समय के हिसाब से गर्मागर्म दाल सब्जी व फुल्के खिलाये। खुले आसमान के नीचे खाटों पर बैठ कर खाना खाया। खाने के बाद पापड़ और फिर दूध आया। बाहर बिछी खाटों पर ही सोने की व्यवस्था हो गई। रात बहुत देर तक मैं, सुदर्शन, फूफाजी सोहनलालजी मुंदड़ा तथा उनका लड़का पिंटू आपस में बातें करते रहे। मैंने अपने ओढ़ने के लिये मोटा चादर लिया था। पता नहीं कब आंख लगी।

तारीख 11 सितम्बर 1997 गुरुवार

स्वाभाविकरूप से सुबह देरी से उठे। फूफाजी को नौ बजे ऑफिस जाना होता है। हमारे को अमृतसर दिखाने का जिम्मा भैया पिंटू ने लिया। हमने फूफाजी से कोटा के वापसी रेल टिकट की व्यवस्था करवाने के लिये कह दिया था। हम घर नाश्ता कर घूमने के लिये निकले। थोड़ा पैदल चल जलियांवाला बाग पहुंच गये। 1913 की वैशाखी के दिन अंग्रेजों की गोलियों से शहीद हुये देशभक्तों की स्मृति में यहां एक बड़ा स्मारक बनवा दिया गया है। बाग में घुसते ही रोमांच सा हो आया। पहले चित्रशाला देखी। फिर वह कुंआ देखा जिसमें सैकड़ों लाशें मिली थी। आसपास के मकानों की दीवारों की ईंटों तथा बाग के खंडहरों पर पड़े गोलियों के निशान अभी तक नजर आ रहे हैं। बीचों बीच बने विशाल स्मारक के सामने खड़े हो फोटोग्राफी की। बाग से पैदल चल कर हम स्वर्ण मंदिर पहुंचे। यहां बहुत बड़े भवन में जूता घर है जिसमें अच्छे घरानों के युवक सेवा कर रहे हैं। हमने जूते–चप्पल उतार कर दिये तो स्वयंसेवकों ने उन्हें सलीके से कपड़े से पोंछ कर अलमारी में रखा एवं हमें टोकन दिया जिसका नम्बर तीन हजार से ज्यादा था। यहां कोई बारह हजार दराजें जूते रखने के लिये बनी हुई हैं। पास ही एक और बड़ा कमरा पोटलीघर है। हिन्दी में गठरी के लिये हमारे हाड़ौती में भी पोटली शब्द का ही प्रयोग होते है। भाषा साम्य देख आश्चर्य हुआ और मानना पड़ा कि कश्मीर से कन्या कुमारी तक

भारत एक है। हमारे पास एक छोटा सा बैग मात्र था जिसे अंदर ले जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी अतः हमने पोटलीघर का उपयोग नहीं किया। स्वर्णमंदिर में कैमरा ले जाने पर भी कोई पाबंदी नहीं है। यहां के विशाल प्रवेश द्वार के बाहर दोनों ओर एक–एक बड़ी बाल्टी रखी हुई है। इनमें सिर ढकने के लिये बहुत सारी रंगीन टोपियों जैसी पगड़ियों पड़ी हुई थी। गुरुद्वारे में सिर ढककर जाना होता है। मैंने अभी रास्ते में ही इस काम के लिये एक बड़ा रुमाल खरीदा है। आगे पैर धोने के लिये साफ पानी की नाली बनी हुई है जिसमें लगातार साफ पानी प्रवाहमान हो रहा है। सभी को इस नाली से होकर ही गुजरना पड़ता है जिससे बाहर की गंदगी अंदर नहीं जा पाती।

स्वर्णमंदिर विश्वप्रसिद्ध है। कुछ वर्षों पूर्व इसे अलगाववादियों से मुक्त कराने के लिये भारतीय सेना ने आपरेशन ब्ल्यू स्टार चलाया था। इसी के गुस्से में इंदिरा गांधी की हत्या हुई और फिर सिख विरोधी दंगे भड़के। इस मंदिर से सदियों से भारत की राजनीति प्रभावित रही है। अभी भी पंजाब की राजनीति यहीं से चलती है। विस्तृत रूप में फैले स्वर्ण मंदिर के कई भाग हैं। स्वर्ण मंदिर के सामने के बाजार को अभी बहुत चौड़ा कर दिया गया है। पहले संकरी गली होने से गंदगी रहती थी तथा आतंकियों को रोकने में भी अड़चन आती थी। पूरा स्वर्ण मंदिर चमचमाते सफेद मार्बल से बना है। इसकी सुंदरता अवर्णनीय है। दरवाजे से अंदर घुसते ही दरबार साहब को घेरे पवित्र सरोवर दिखाई देता है। सरोवर के चारों ओर चालीस फीट करीब चौड़ा विशाल परिक्रमा पथ है। पूरे परिक्रमा पथ पर चटाई बिछाई गई है ताकि दोपहर में भी श्रद्धालुओं के पैर गर्म संगमरमर से न जलें। हम भी इसी चटाई पर चलते हुये बायीं ओर बढ़े।

स्वर्ण मंदिर गत सालों में बहुत ज्यादा चर्चित रहा है और अखबारों से इसके बारे में लगातार जानकारियां मिलती रही है। यहां के मुख्य पूजा स्थल को दरबार साहिब के नाम से जानते हैं जो तालाब के बीच में बना हुआ है। इस तालाब में नहाने का महात्म्य कई बार सुना था अतः हमारे मार्गदर्शक पिंटू के मना करने के बावजूद मैं नहाने के कपड़े साथ लेकर आया था। यहां सरोवर का पानी हरा पड़ चुका है तथा यहां मात्र चार–पांच सरदार ही नहा रहे हैं, अतः मैंने भी नहाने का विचार नहीं बनाया। हमारे सभी साथी तो मेरे नहाने के विचार से ही नाराज थे क्योंकि उनमें से किसी को तैरना ही नहीं आता है। वैसे इस सरोवर में शायद उतरकर नहाना मना है। विशाल मच्छ किनारे पर से ही दिखाई देते हैं। धार्मिक स्थल की अन्य पाबन्दी– कपड़े धोना, कुल्ला करना या थूंकना, साबुन लगाना, मछली पकड़ना आदि यहां लागू है ही। यहां मछलियों को आटा, चना तथा कड़ाह प्रसाद यात्रियों द्वारा खिलाया जाता है। हम यहां दोपहर ग्यारह बजे पहुंचे तब गर्मी चरम पर थी। हम पैदल चलते सरोवर की परिक्रमा करते पूर्व से दक्षिण, फिर पश्चिम सिरा पार कर उत्तरी ओर चले गये। स्वर्ण

मंदिर को पूरा जानने समझने के लिये गुरुमुखी का ज्ञान आवश्यक है जिससे हम सभी अनजान हैं। पिंटू यह भाषा जानता है पर उससे भी कहां तक सारे बोर्ड पढ़वाते। दरबार साहब का रास्ता बारह फुट करीब चौड़े पुल के रूप में बनाया गया है। यहां कई काउंटर पैसे जमा करवाने के हैं जिससे हम प्रसाद खरीद सकें। एक दोना प्रसाद तथा फूल खरीद कर हम स्वर्णपत्र चढ़े अत्यन्त सुन्दर और पवित्र भवन में प्रवेश कर गये। प्रसाद चढ़ाने के बाद हम विस्मित से इस भवन को देखते रहे। हम दूसरी मंजिल पर भी गये। पूरे भवन की दीवारों एवं आलों पर अत्यन्त महिन कारीगरी स्वर्णिम रंगों में हो रही है। पूरे भवन में गुरुग्रंथ साहिब की चौपाइयां लिखी हुई है। हमारे जैसे बाहर से आने वाले दर्शकों की रुचि मंदिर की भव्यता देखने में ही ज्यादा थी। वैसे यहां ज्यादा भीड़ नहीं थी और ऊपर की मंजिल पर तो और भी कम लोग थे। हमारे अतिरिक्त हमें यहां कोई गैर सिक्ख भी नहीं दिखाई दिया। इस मंदिर से लगातार संगीतमय गुरुवाणी का पाठ चलता रहता है। ध्वनिविस्तारक यंत्रों के प्रभाव से इसे दूर–दूर तक सुना जाता है। ऊपर की मंजिल की खिड़कियों से हमने सरोवर तथा आसपास बने भवनों का विहंगम दृश्य देखा। पूर्ण तृप्त होने पर हम नीचे उतरे एवं ग्रंथ साहिब को नमन करते हुये उसी मार्ग से वापस लौटे। पुल के किनारे पर खड़े होकर बहुत देर तक हम सरोवर के मच्छों को देख मनोरंजन करते रहे। पुल पार कर दायीं ओर अर्थात् पूर्व दिशा में घूमे। सामने विशाल भवन अकाल तख्त खड़ा है। सिख धर्म की विश्व की सर्वोच्च अदालत। यह इमारत ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार के दौरान टूट गई थी अब दुबारा बन रही है। अभी इसका काम चल रहा हैं। किंवदन्ती है कि अकाल तख्त के साथ कोई श्राप जुड़ा हुआ है। इससे यह इमारत पूरी बनते ही पुनः टूट जाती है। यह तख्त कई बार टूट–टूट कर बना है। श्राप की कहानी भी सुनी। किसी संत ने इसका निर्माण शुरु करवाया तथा दूसरे संत ने रात में ईर्ष्यावश कोई पत्थर टेढ़ा कर दिया। नाराज निर्माता संत रूठ कर चले गये और इसे कभी पूरा न होने का श्राप दे गये। मुगलकाल में इसे तोड़ा गया तथा भूकंप से भी इसे नुकसान हुआ बताया।

हमने दरबार में चढ़ाने के लिये फूल लिये थे। हमारे मार्ग दर्शक पिंटू को भी जानकारी नहीं थी कि फूल कहां चढ़ाते हैं। वापसी में हमने वे फूल ध्वज स्तम्भ पर चढ़ा दिये। वापसी में एक जगह प्रसाद वितरण हो रहा था। बाकी ने तो दोनों हाथ फैलाकर प्रसाद ले लिया पर पत्नि ने हाथ में बैग होने के कारण दायां हाथ ही आगे कर दिया। वितरक सरदारजी ने प्रसाद नहीं दिया और समझाया कि प्रसाद इस तरह झोली में अदब के साथ लेते हैं। यहां मिला प्रसाद हमने अपना–अपना खा लिया तथा दोना घर लाने के लिये रख लिया। इस दोने को रखने के लिये हमें बाहर के एक दुकानदार से प्लास्टिक की थैली मांगनी पड़ी।

अकाल तख्त के सामने व ध्वजास्तम्भ के आसपास हमने फोटोग्राफी की। सभी ओर बहुत ही लुभावने दृश्य हैं। पूरब की ओर के परिक्रमा पथ से हमने स्वर्णपत्र पर सूर्य की रोशनी पड़ने से चमकते दरबार साहब के गुंबद का फोटो लिया। मुख्य प्रवेश द्वार के पास दो ऐतिहासिक व पवित्र वृक्ष हैं, जिनकी आयु सैंकड़ों वर्ष है। यहां बैठकर किन्हीं गुरुजी ने तपस्या की थी। गुरुमुखी में एक सूचनापट्ट पेड़ पर लटका है जिसे हम नहीं पढ़ पाये। पूरे स्वर्ण मंदिर परिसर में चार–पांच जगह कमरों में ग्रंथी पाठ करते हैं जहां श्रद्धालु कुछ भेंट चढ़ा जाते हैं। हमारी स्वर्णमंदिर यात्रा बहुत अच्छी रही। बाहर आकर जोड़ा सेवा केन्द्र से टोकन देकर हमने अपने जूते–चप्पल प्राप्त किये और रिक्शों में बैठ दुर्गियाना मंदिर चले गये।

दोपहर के बारह बज रहे हैं। सूर्य सिर पर तप रहा है। इस मंदिर का भी विशाल प्रांगण है जिसमें अलग–अलग कई विभाग हैं। लोहे का एक बड़ा फाटक पार कर जोड़ा सेवा में जूते उतारे। यहां जूता स्टैण्ड स्वर्णमंदिर की अपेक्षा बहुत छोटा है। पास ही प्याऊ है जिसमें ठंडे पानी के लिये वाटर कूलर लगा है। यहां भी स्वर्णमंदिर की तर्ज पर सरोवर के बीच में मंदिर बनाया गया है। एक चौड़े रास्ते से तपते मार्बल पर चल देव प्रतिमाओं के सामने पहुंचे। यह आधुनिक मंदिर है। तीन प्रकोष्ठ में से पहले में भगवान विष्णु, बीच में मां दुर्गा तथा तीसरे में राम दरबार के दर्शन हैं। तीनों मंदिरों में आदमकद मार्बल की बहुत ही सुंदर प्रतिमायें स्थापित हैं। दर्शन कर मैं भावविभोर हो गया और स्वतः ही रामस्तुति गाने लगा। यहां के पुजारियों ने हमें दोने में रखकर चीनी के मखानों का प्रसाद दिया। दर्शनपूजन के बाद हमने परिक्रमा की। मंदिर के पीछे से तालाब का विहंगम दृश्य दिखाई देता है। तालाब में घाट बना है तथा बीच में शिवपार्वती की प्रतिमा लगी है। तालाब के हरे पानी में छोटी–छोटी मछलियां तैर रही है। यहां फुलवारी भी सजाई गई है। मानव निर्मित विशाल कृत्रिम तालाब को कुछ देर निहार हम लौटे। यहां हमें दस–बीस ही दर्शक और मिले क्योंकि यह दर्शन का समय भी नहीं है। तालाब परिक्रमा में यहां तुलसी आश्रम बना हुआ है। हमने आश्रम अंदर जाकर देखा। यहां तुलसीदास जी की प्रतिमा स्थापित है। गर्भगृह की दीवारों पर कई संतो के चित्र लगे हुये हैं तथा रामायण की चौपाइयां अंकित है। यहां दालान में फर्श बिछे हैं तथा पंखे लगे हुये हैं जैसे अभी सत्संग होकर निपटा हो। हमने दर्शन कर तुलसी चरणामृत ग्रहण किया एवं पंखा चलाकर फर्श पर आराम किया। गर्मी व तपते मार्बल पर घूमते, पसीने से तरबतर हमें यहां बहुत सुकून मिला। पर्याप्त आराम के बाद बाकी परिक्रमा पूरी कर हम मुख्य मंदिर के सामने आये। बायीं ओर स्थित शिव मंदिर में दर्शन किये। थोड़ी दूर हनुमान मंदिर है पर हम इतने थक गये थे कि यहीं से नमन कर लिया। जूते पहनने के बाद हमने एक छोटे होटल पर नाश्ता किया तथा सुदर्शन ने कई जगह फोन से बात की।

दुर्गियाना मंदिर एक दीवानजी द्धारा बनवाया गया है। दीवानजी स्वर्णमंदिर समिती में थे। किसी बात पर विवाद हुआ और दीवानजी को स्वर्णमंदिर समिती से निकाल दिया गया। बस उन्होंने इसी तर्ज पर दुर्गियाना मंदिर का निर्माण करवा दिया। अब स्वर्णमंदिर सिखों का तथा दुर्गियाना मंदिर हिन्दुओं का हो गया। आजकल यहां दुर्गियाना मंदिर के शिखर पर भी स्वर्णपत्र चढ़ाने का काम चल रहा है। जगह–जगह दान पेटियां रखी हुई हैं पर हम हिन्दुओं में अभी इस स्थान के प्रति इतनी श्रद्धा नहीं बन पाई है।

इस मंदिर की बुनियाद किसी चमत्कार, संत महात्मा की तपस्या पर नहीं टिकी है बल्कि एक विवाद के प्रतिफलस्वरूप इसका निर्माण हुआ है। इस मंदिर का मुख्य द्वार पूर्वी ओर है तथा सभी देवमूर्तियां पूर्वाभिमुखी हैं। स्वर्णमंडित कलश बहुत दूर से चमचमाता दिखाई देता हैं। सारी जानकारियां हमें हमारे साथ पथ प्रदर्शक के रूप में चल रहा पिंटू उर्फ मुकेश दे रहा था।

दुर्गियाना मंदिर से दो साइकिल रिक्शे कर हम श्री वैष्णोंदेवी माता मंदिर पहुंचे। एक आधुनिक पाश कालोनी में कुछ वर्षों पूर्व ही यह मंदिर बनाया गया है। यहां भारी भीड़ में हमें आध घंटा सुदर्शन के इंतजार में, जूता सेवा पर खड़े रहना पड़ा। साबूजी दीर्घशंका से निवृति हेतु चले गये थे। साबूजी के आने के बाद जूते जमा कराकर कूलर के पानी से हाथ मुंह धोये एवं नल के पानी से पैर धोये। पिंटू हमें भजन कीर्तन करती महिलाओं की भारी भीड़ के बीच में से निकाल कर पहली मंजिल पर ले गया। रास्ता असली वैष्णव देवी के समान बनाया गया है। बाणगंगा, अर्द्धकुंवारी, हत्थीमत्था, सांझीछत आदि सभी जगह के नाम लिखे गये हैं तथा रास्ते को ऊँचा–नीचा बनाया गया है। करीब तीन मंजिल के बराबर ऊँचाई घूम–फिर कर चढ़े तब सामने माताजी का मंदिर नजर आया। यहां बैठे महंतजी सभी यात्रियों को माता के खजाने के रूप में सिक्के दे रहे हैं। यहां रखी कई दान पेटियों में से एक में हमने भी दक्षिणा डाली और सरल मार्ग से नीचे आ गये।

वैष्णव देवी की प्रसिद्धी के साथ ऐसे मंदिरों एवं झांकियों की बाढ़ सी आ गई है। हरिद्वार में भी ऐसा मंदिर बना है। हमारे बारां में दुर्गा अष्टमी पर ऐसा पंडाल चौमुखा में बनाया जाता है। हम अभी साक्षात् त्रिकुटा पर्वत पर जाकर ही माताजी के दर्शन करके आये हैं अतः हमें यह जगह रुचिकर नहीं लगी। हमारी बातों में भक्ति के स्थान पर व्यंग्य ज्यादा था। नीचे आने पर मैंने देखा कि पहली मंजिल पर बने मंदिर में मां लालदेवी की मूर्ती स्थापित है और यह पूरा परिसर मां लालदेवी ट्रस्ट द्वारा संचालित है। महिलायें लालदेवी के ही भजन गा रही थी। इस ट्रस्ट के मंदिर उत्तराखंड में भी हैं। यहां हम गर्मी से बहुत परेशान रहे अतः ज्यादा देर नहीं रुके।

इस ट्रस्ट परिसर में स्वयं की बहुत अच्छी तथा सस्ती खानपान की दुकानें हैं। पिंटू की सलाह पर हमने इनका उपयोग किया। नाश्ता तो किया ही मिठाई भी खरीदी। यहां कर्मचारियों का व्यवहार व खानपान के सामान सभी अच्छे लगे। यहां अग्रिम भुगतान एवं स्वयंसेवा व्यवस्था है। यहां से हमें वापस घर लौटने हेतु साधन बहुत कठिनाई से मिल पाया। एक ऑटो रिक्शा में पाँचों ठुंस कर ढाई बजे घर पहुंचे। भोजन के दौरान ही फूफाजी भी आ गये जो हमारे लिये दो खुशखबरी लाये। एक तो शाम को भारत–पाक सीमा बाघा बोर्डर पर घूमने चलना है। दूसरा हमारे कल शाम के फ्रंटियर मेल से वापसी टिकट की व्यवस्था हो गई है। भोजन के बाद मैने अपने टाटा अस्पताल के साथी सतीश महाजन को ढूंढने जाने का निश्चय किया। जब से हमारा अमृतसर का कार्यक्रम बना मेरे मन में उससे मिलने की इच्छा बलवती होती गई। मेरे जेहन में उसका पता 'महाजन हार्डवेयर स्टोर, लौहगढ़ इनसाइड बसा हुआ है। मैंने आते समय बस में एक सहयात्री से चर्चा की थी तो उसने बताया था कि प्रसिद्ध दुकान है, आराम से मिल जायेगी। प्रातः मैने फोन डायरेक्टरी भी देखी थी पर उसमें तो इस नाम के सात फोन थे। लिहाजा अब मैने फूफाजी से मार्गदर्शन एवं अनुमति ली और मैं साइकिल रिक्शे में बैठ सीधा 'महाजन दी हट्टी' नामक दुकान के सामने उतरा। वहां पूछने पर पता लगा कि यहां दो सतीश महाजन हैं। एक मालिक तथा दूसरा नौकर। सौभाग्य से उस समय दोनों ही वहां थे। दुर्भाग्य से हम चौबीस साल बाद मिले मित्र आमने–सामने होते हुये भी एक दूसरे को नहीं पहचान पाये। बातचीत कर पुरानी घटनाओं का हवाला दिया और फिर भावविभोर हो गले मिले। यह दुकान छोटे भाई के दिशानिर्देशन में चल रही है। सतीश के पिताजी दुर्गालालजी जो बंबई गये थे अभी यहां नहीं मिल पाये। वे अभी–अभी घर गये हैं। सतीश अभी दुकान नहीं छोड़ सकता, लगातार ग्राहक आ रहे हैं। मुझे भी जाने की जल्दी है। मैं उसका घर चलने, घर पर ही रुकने, भोजन करने, भाभीजी को लेकर आने जैसे आग्रह आज पूरे नहीं कर सकता। उसने मुझे ठंडा सोडा पिलाया जिसे मैं बमुश्किल हलक में उतार सका। उनके यहां शराब पिला कर स्वागत करने का रिवाज है। वे स्वयं भी खातेपीते होंगे। उनके परिवार की यह बातें जानकर मैं विचलित हुआ। अब मैं इनसे कैसे सम्बंध कायम रख पाऊँगा? मैने उसे हमारा आज का अटारी बाघा बार्डर का कार्यक्रम बताया पर आज वह बहुत ज्यादा व्यस्त है अन्यथा हमारे साथ चलता। उसने मुझे अजीतनगर तक का साइकिल रिक्शा छः रु. मात्र में करवा कर मुझे विदा दी। आते समय इसी रास्ते के मैंने दस रु. दिये थे। पुनः मिलने एवं कल आने के वादे के साथ मैंने उससे विदा ली। उसके पिताजी श्री दुर्गालालजी से मिलने की मेरी हसरत बनी रही।

नये रिक्शेवाले को अजीतनगर का रास्ता मुझे बताना पड़ा और अपेक्षाकृत ज्यादा समय लगा घर पहुंच सका। घंटा भर आराम के बाद ही एक दस सीटर टैम्पो आ गया जो हमें अटारी तक

छोड़ेगा। पूरी पिकनिक की तैयारियां की गई। फल, नाश्ता, चाय थर्मस, पानी, बिछावट आदि सभी सामान लिये गये। इस विक्रम वाहन में बैठे तो आराम से, पर चलने पर कई समस्याओं से रुबरु हुये। इस वाहन की गति बहुत कम है। इसके इंजन की गर्मी एवं शोर अंदर आ हमें सता रहा था। सस्ता भी नहीं है मात्र 32 किमी आना और जाना दो सौ चालीस रु. में। यहां पश्चिम की ओर सीधा चौड़ा रोड जाता है। पूरे रास्ते फूफाजी हमें खास–खास जगह दिखाते रहे। सारे कालेज इसी रोड पर हैं। सवा घंटे में हम अटारी पहुंचें। बॉर्डर अभी यहां से आधा किमी दूर है जहां वाहन ले जाना मना है। अटारी में अब चाय–नाश्ते की कई दुकानें लग गई हैं। फूफाजी ने बताया कि वे जब पिछली बार आये थे तो यहां कुछ नहीं था अन्यथा हम क्यों ये बोझ ढोते? हम सामान उठा तुरंत तेजी से सीमा की ओर लपके। हमें काफी देर हो गई है और झंडा उतारने का समय हो गया है। हम समय से पूर्व ही पहुंच गये और वहां की व्यवस्थाओं के अनूरूप दर्शकों के बीच जा बैठे।

अटारी नामक कस्बे से पाक सीमा तीन किमी है। रोड बहुत चौड़ा एवं अच्छा है। सीमा के आध किमी पहले से ही सड़क के दोनों ओर सेना के विभिन्न संगठनों के भवन, कार्यालय तथा विभिन्न जांच चौकियां हैं। सड़क के दोनों ओर फुटपाथ बना है इसके बाद हरी घास का बढ़िया लॉन तथा मेंहदी की झाड़ियां लगी है। जगह–जगह फलों के पेड़ लगाकर इस स्थान को अच्छे बगीचे का रूप दिया गया है। जनता यहां पिकनिक मनाने आती है। रास्ते में दो–तीन जगह वाहनों पर नियंत्रण के लिये बैरियर लगाये गये हैं। निर्धारित समय पर भारत से पाक वाहनों का आनाजाना होता है। यहां से भारत सरकार द्वारा की गई तारबंदी तथा फ्लड लाइट व्यवस्था भी हमें दिखाई दी। बकरी या खरगोश जैसा जीव भी इस तार बंदी को पार नहीं कर सकता। यह व्यवस्था भारत सरकार ने अपने खर्चे पर तस्करों एवं आतंकवादियों को रोकने के लिये की है। जैसे कोई सेठ–साहूकार अपनी धन सम्पत्ति की रक्षा के लिये मकान की सुरक्षा व्यवस्था करे। पड़ौसी देश के लिये यह शर्म की बात होना चाहिये पर हद तो ये है वे इस तारबंदी का ही विरोध कर रहे है।

यहां बोर्डर पर काफी भीड़ हो गई और आगे बैठने के लिये भागमभाग हो गई। हम सब साथी आपस में बिछुड़ गये। मैं आगे जाकर सड़क पर बैठ गया। साढ़े सात बजे बाद नौटंकी शुरु हुई। पाकिस्तान व भारत का झंडा सड़क पर अलग–अलग किनारों पर लगा है तथा दूर से देखने पर दोनों झंडे तिर्यक रेखा पर सड़क के दोनों ओर दिखाई देते हैं। दोनों देशों ने अपनी–अपनी सीमा में अलग–अलग फाटक लगा रखे हैं जिनके बीच कोई बीस फीट जगह है। कार्यक्रम के दौरान दोनों देशों के सैनिक वेषधारियों ने झटके से दोनों देशों के फाटक एक साथ खोले। फाटक खुलते ही सामने बैठे पाकिस्तानी नागरिक भी हमारी तरह ही धक्का–मुक्की करते दिखाई दिये। पाकिस्तानी फौजी काली वर्दी

में तथा भारतीय खाकी वर्दी में हैं। दोनों के फौजी अपने अफसरों के पास झंडा उतारने की अनुमति लेने जाते हैं। अनुमति मिलने पर बैंड की धुन के साथ दोनों ध्वज एकदम बराबरी से डोरी तिरछी करके उतारे जाते हैं। एक समय दोनों झंडे एक लाइन में आ जाते हैं तथा पीछे का झंडा दिखाई देना बंद हो जाता है। बड़ा अच्छा सा लगता है। काश सदैव ऐसा ही अच्छा रहे। बाद में दोनों ध्वज ससम्मान अपने नियत स्थान पर रख दिये जाते हैं। इस पूरे समय दोनों ओर के सैनिक चलने में विशेष फुर्ती एवं जोश का प्रदर्शन करते हैं जो हास्यास्पद तक लगने लगता है। यहां भारतीय सैनिक के सामने पाक सैनिक एकदम बौना सा लग रहा था। इन्हीं अवसरों को मैंने अपने कैमरे में कैद कर अपनी रील समाप्त की। यहां दोनों ओर से दर्शक भी प्रतियोगिता की भावना से जोर–जोर से तालियां बजा रहे थे। खासकर अपने जवानों के प्रदर्शन के अवसर पर। मैंने 'भारत माता की जय' का नारा बुलंद करना चाहा पर कोई नहीं बोला। शायद यहां नारे बाजी पर प्रतिबंध हो। कुछ देर बाद दोनों ओर के फाटक बंद कर दिये गये। फिर महिलाओं एवं बच्चों को फाटक तक जाने दिया गया। उधर से महिलायें भारतीय फाटक तक आई फिर परस्पर महिलाओं एवं बच्चों ने बातचीत की और हाथ मिलाये। पुरुषों को फाटक से थोड़ा दूर ही रखा गया। चूंकि यहां हमारा कोई मिलने वाला आने वाला नहीं था इसलिये हमने फाटक के निकट जाने में कोई रुचि नहीं दिखाई। भीड़ भी बहुत ज्यादा थी। लौटते समय हम सारे बड़ी मुश्किल से मिल पाये। एक स्थान पर बैठ हमने नाश्ता किया और साढ़े आठ बजे करीब वापस चल दिये। वही आध किमी चलकर हमने हमारा विक्रम वाहन ढूंढा। हमने हमारा कार्यक्रम फूफाजी की लड़की के घर मिलने चलने का बना रखा था अतः रात दस बजे सीधे वहीं उतर ऑटो वाले को विदा किया।

फूफाजी की लड़की इसी शहर में है। स्वाभाविक है वह हमें मिलने हेतु बुला रही थी। हमारा अच्छा स्वागत सत्कार किया गया। नाश्ते की बहुत सारी प्लेटों में से हमने कुछ पीस ही लिये। भोजन का भी बहुत आग्रह हुआ पर किसी की इच्छा नहीं थी। ग्यारह बजे वहां से विदा ली। वाहन कोई आधा किमी पैदल चलने के बाद मिल सका। घर पहुंच सो गये।

तारीख 12–9– 1997 शुक्रवार

साबूजी के एक ओर रिश्तेदार ने हमें भोजन पर आमंत्रित किया है पर हमें बार्डर नामक फिल्म देखने जाना है इसलिये हमने उनके यहां साढ़े नौ बजे पहुंच मात्र नाश्ता ही करना स्वीकार किया। नाश्ते के तुरंत बाद हम साइकिल रिक्शों से टॉकीज जा पहुंचे। भारी भीड़ के कारण बालकनी के टिकट मिलने एवं सीटें ढूंढने में समय लगा। गेट पर पुरुषों की जामा तलाशी भी ली गई। हमारे सीटों पर बैठने तक फिल्म चालू हो चुकी थी। फिल्म तो अच्छी है पर टॉकीज खराब है। असुविधाजनक सीटें, गर्मी और पूरी बालकली में मात्र एक पंखा, पीने के पानी का अभाव ज्यादा अखरे। मध्यावकाश में शीतल

पेय की बोतल पीकर ही प्यास बुझानी पड़ी। फिल्म समाप्त होने के बाद हम सीधे घर गये। महिलाओं एवं पिंटू को छोड़ सुदर्शन व मैं महाजन परिवार से मिलने उनके घर 97, रेल्वे लिंक रोड गये। घर ढूंढने में कोई परेशानी नहीं हुई। दुर्गालालजी हमें घर पर ही मिले। अच्छा स्वागत सत्कार व नाश्ता हुआ। पैग पीने तक का भी आग्रह किया गया। मैंने दुर्गालालजी से पूछ ही लिया,

''क्या आपके घर में मांस–मदिरा का चलन है?''

दुर्गालालजी ने झट से मेरी बात का खंडन किया। 'हमारे रहते घर में तो नहीं बनेगा, हमारे बाद बच्चे कुछ भी करें। हां मेहमानों के लिये दारु–शारु अवश्य फ्रीज में रखी रहती है। यहां का चलन ही ऐसा ही है।''

वे काफी बुजुर्ग हो गये हैं फिर भी काफी संस्थाओं में सक्रिय हैं। वे दुर्गियाना मंदिर की प्रबंधन कमेटी में भी हैं। उन्होंने कहा कि हमारे साथ चलते तो तुम्हें हम दिखाते मंदिर। अभी तुमने क्या मंदिर देखा है? हमारे से शाम के भोजन का भी बहुत आग्रह हुआ पर हमें अब निकलना ही पड़ेगा ना? ड्राइंगरुम में टंगें चित्रों को देखकर पता लगा कि सतीश व उसका छोटा भाई दोनों लायंस क्लब के भी सदस्य हैं। मैं भी लायंस क्लब से जुड़ा हूं इसलिये यह बात मुझे अच्छी लगी। छोटा भाई अनेकों समाजसेवी संगठनों तथा हिन्दु संगठनों से जुड़ा हुआ है।

''आतंकवादियों की हिट लिस्ट में उसका नाम था। छः माह तक सरकार ने उसे सुरक्षागार्ड उपलब्ध करवाई। चार स्टेनगनधारी जवान हमेशा उसके साथ चलते थे। जिसे बाद में हमने ही व्यापार में अवरोध आने के कारण हटवाया। अभी भी हम उसे दुकान में अंदर ही अंदर बिठाते हैं।'' श्री दुर्गालाल जी ने जानकारी दी।

यहां कमरे में कई फोटो लगे हैं। एक में छोटा भाई बेअंतसिंह जी से हाथ मिला रहा है। पंजाब में आतंक के दिनों में इस परिवार ने आतंकियों के खिलाफ संघर्ष में पूरा योगदान दिया है। अभी भी अमृतसर के अधिकांश हिन्दु संगठन इसी परिवार की दम पर चल रहे हैं। मुझे एक पुरानी घटना याद आ गई। वर्ष पक्का याद नहीं रहा पर पंजाब में आतंकवाद पैदा होने की प्रारम्भिक घटना ही है। बारां में मैंने अखबार में पढ़ा कि आतंकियों ने अमृतसर के एक मंदिर के सामने गाय की पूंछ काट कर डाल दी तो मेरा खून खौल उठा। उसी जज्बे में मैंने एक पत्र सतीश महाजन को लिख मारा। पत्र में मेरे मन का पूरा उबाल था। मेरा हिन्दी का पत्र उसने समझा और मेरी भावनाओं की सराहना करते हुये वह पत्र वहां के हिन्दु संगठनों की बैठक में भी प्रस्तुत कर दिया। पत्र में आतंकियों के खिलाफ रोष था तथा बदला लेने के लिये नौजवानों को आह्वान था। सभी ने एक मत से उस संघर्ष में साथ देने के लिये मुझे बुलाने का प्रस्ताव पास कर दिया। कुछ दिनों बाद मुझे सतीश महाजन का पत्र मिला जिसमें उसने पूरा

घटनाक्रम लिखा तथा मुझे अमृतसर बुलाया। तब तक मेरा मन शांत हो गया तथा इस पत्र को मैंने पूर्णतः अनदेखा कर दिया। यहां मेरी एक क्रंतिकारी की छवि बनी हुई थी जो शायद आज टूट गई।

दुर्गालालजी से विदा ले सीधे फूफाजी के घर पहुंचे। महिलायें भी खरीददारी करने गई हुई हैं। हमारा चंडीगढ़ देखने का भी कार्यक्रम था पर समय की कमी के कारण रद्ध करना पड़ा। माहेश्वरी सम्मेलन के कारण साबूजी को 14 तारीख के पहले घर पहुंचना जरूरी है। मेरे मन में मलाल रहा पर भगवान फिर कभी बुलवायेगा। साबूजी के यहां तथा चंडीगढ़ में कई रिश्तेदार तथा व्यापारी हैं जो हमारा आतिथ्य करना चाहते हैं पर सबको सखेद मना किया। महिलाओं के बाजार से लौटते ही सामान बांधे गये एवं सारे सामानों को लाद रात साढ़े आठ बजे प्लेटफार्म पहुंचे। हमने घर खाना नहीं खाया था अतः बुआजी ने सब्जी व परांठों का एक बड़ा पैकेट तैयार कर हमारे साथ रखा। हमें कुली की मदद से हमारी सीटों पर सामान जमाने में कोई दिक्कत नहीं हुई। भाई पिंटू तथा बुआजी–फूफाजी सभी हमें विदा करने प्लेटफार्म आये। सतीश महाजन भी अपने छोटे भाई की पत्नी के साथ हमें ढूंढता हुआ यहां आ पहुंचा। उसे हमें ढूंढने में काफी दिक्कत आई। आरक्षण चार्ट में मेरा नाम एच. बंसल लिखा हुआ है और वो हेमराज बंसल ढूंढता रहा। चाहत होती है तो प्रेमी मिल ही जाते हैं। उन्हें हमारे से इतनी प्रीत है। सतीश ने बताया कि उसकी पत्नी पीहर कुद गई हुई है। आप लोग महिलाओं को मिलाने घर नहीं लाये तो हमारी महिलाओं ने आप से मिलने की जिद पकड़ ली। क्या मैं इस प्रीत को, स्नेह को निभा पाऊँगा? मैंने सभी को बारां आने का न्यौता दिया और एक तरह से वचन भी लिया पर ऐसे वचन पूरा होना कितना मुश्किल होता है। सतीश ने हम सभी को बहुत ठंडी लिम्का हमारे न चाहते हुये भी पिलाई और पुनः अमृतसर आकर उनके घर पर ही ठहरने का वादा लिया।

गाड़ी रवाना होने पर अपनों से भारी मन से विदा ली। फूफाजी व महाजनजी दोनों का प्रेम शायद ही मैं कभी भूल पाऊँ? ट्रेन में कोई तकलीफ आनी ही नहीं थी। ठंडा पीने के कारण मैं जुकाम तथा गले की जलन से पीड़ित रहा। एक तरह से यह मेरे चाय न पीने के व्रत का खामियाजा था। रास्ते में यात्रा के संस्मरण सुना लुत्फ उठाते रहे। रात दस बजे बुआजी द्धारा पैक किया गया खाना लिया। रात मुझे अच्छी नींद नहीं आई। तारीख 13–9–1997 शनिवार प्रातः भी हमने बचे हुये परांठों का नाश्ता किया। दोपहर का भोजन प्लेटफार्म से लिया। दोपहर तीन बजे हम राजी खुशी अपनी यात्रा समाप्त कर कोटा प्लेटफार्म पर उतरे। वहां से बस पकड़ बारां पहुंचे।

।। इति ।।